INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

HANDWRITTEN NOTES

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

RAS

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

भाग-2

राजस्थान का भूगोल

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

(Rajasthan Administrative Service)

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग – 2

राजस्थान का भूगोल

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) Pre.**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Order Link - https://bit.ly/ras-pre-notes

WhatsApp Link- https://wa.link/6r99q8

Contact Us - 8233195718, 9694804063,7014366728,8504091672

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम (2022)

राजस्थान का भूगोल

1. सामान्य परिचय 1

2. प्रमुख भू – आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं 25

3. जलवायु की विशेषताएं 44

4. प्रमुख नदियाँ एवं झीलें 58

5. प्राकृतिक वनस्पति 84

6. मृदा 97

7. प्रमुख फसलें 103

- गेहूँ
- मक्का
- जौ
- कपास
- गन्ना
- बाजरा

8. राजस्थान में पशुपालन 118

९. प्रमुख उद्योग 128

10. प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल सरंक्षण तकनीकें 132

11. जनसंख्या-वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात एवं प्रमुख जनजातियाँ 145

12. खनिज-धात्विक एवं अधात्विक 162

13. ऊर्जा संसाधन-परम्परागत एवं गैर परम्परागत 179

14. जैव विविधता एवं इनका संरक्षण 192

15. पर्यटन स्थल एवं परिपथ 198

राजस्थान का भूगोल

अध्याय – I

सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, राजस्थान के भूगोल का अध्ययन करने के लिए हम इसे दो भागों में विभाजित करेंगे-

1. सामान्य परिचय

2. भौतिक स्वरूप

1. सामान्य परिचय -

प्रिय छात्रों, सामान्य परिचय के अंतर्गत हम राजस्थान के निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे-

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख

(ख) राजस्थान की स्थिति

(ग) राजस्थान का विस्तार

(घ) राजस्थान का आकार

(ङ) राजस्थान की आकृति

2. भौतिक स्वरूप -

इसी प्रकार भौतिक स्वरूप के अंतर्गत हम निम्न विषयों को विस्तार से समझेंगे –

(क) पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

(ख) अरावली पर्वतीय प्रदेश

(ग) पूर्वी मैदानी प्रदेश

(घ) दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश

1. राजस्थान का परिचय

राजस्थान शब्द का अर्थ :- राजाओं का स्थान

(क) राजस्थान शब्द का उल्लेख :-

- राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विक्रम संवत 682 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।
- मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक **"मुहणोत नैणसी"** ने भी अपनी पुस्तक "नैणसी री ख्यात" में भी **राजस्थान शब्द का प्रयोग** किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।

महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है।

जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सन् 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को **"राजपूताना"** शब्द कहकर पुकारा था। इस तथ्य का वर्णन विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक "मिलिट्री मेमोरीज ऑफ़ मिस्टर थॉमस" में किया है।

जॉर्ज थॉमस का परिचय :-

- जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे, जो कि 18 वीं. सदी में भारत आए और 1798 से 1801 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे।
- इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन् था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।

विलियम फ्रैंकलिन :-

- विलियम फ्रैंकलीन मूल रूप से लंदन के निवासी थे। यह जॉर्ज थॉमस के घनिष्ट मित्र थे। उन्होंने 1805 ई. में जॉर्ज थॉमस के ऊपर "A Military Memories of George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।
- अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार **"अबुल फजल"** ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए **"मरुभूमि"** शब्द का प्रयोग किया है।
- 1829 ईस्वी में **"कर्नल जेम्स टॉड"** ने अपनी पुस्तक **"एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान"** में सर्वप्रथम राजस्थान को रायथान, रजवाड़ा" या राजस्थान का नाम दिया था।

कर्नल जेम्स टॉड :-

- कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1822 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे।

- कर्नल जेम्स टॉड ब्रिटेन के मूल निवासी थे, उन्होंने अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें **घोड़े वाले बाबा** के नाम से भी जाना जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड को **"राजस्थान के इतिहास का पितामह"** कहा जाता है।
- कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को "सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" के नामक से भी जानते हैं।
- इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार "गौरीशंकर -हरीशचंद्र ओझा" ने किया था। इसे हिंदी में "प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण" कहते हैं।
- कर्नल टॉड सर्वेक्षण के सिलसिले में अजमेर और उदयपुर में कई जगह पर रहे थे- उनमें भीम नामक कस्बे में छोटा सा गाँव बोरसवाडा भी था- जो जंगलों और अरावली-पहाड़ों से घिरा हुआ है।
- उन्हें यह जगह पसंद आई तो उदयपुर के महाराजा भीम सिंह की सहमति से स्वयं के लिए बोरसवाडा में एक छोटा सा किला बनवा लिया।
- महाराज भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गाँव का नाम टॉडगढ़ रख दिया, जो कालान्तर में टाडगढ़ कहलाने लगा। टाडगढ़ आज अजमेर जिले की एक तहसील का मुख्यालय है।
- कर्नल टॉड के किले में वर्तमान में सरकारी स्कूल चलता है

(ख) <u>राजस्थान की स्थिति</u>:- प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे।

(I) राजस्थान की स्थिति "पृथ्वी" पर:- पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा –

(क) अंगारा लैंड / यूरेशियल प्लेट

(ख) गोंडवाना लैंड प्लेट

(ग) टेथिस सागर

(घ) पेंजिया

(ङ) पेंथालासा

नोट:- प्रिय छात्रों, कृपया ध्यान दें कि – आज से लाखों करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी दो भागों में विभाजित थी।

1. स्थल

2. जल

- जैसा कि आज भी दिखाई देता है, लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखें तो हमें यह कई भागों में विभाजित दिखाई देता है, जैसे सात महाद्वीप अलग - अलग है।
- उनके भी कई देश एक - दूसरे से काफी अलग अलग है। लेकिन लाखों – करोड़ों वर्ष पूर्व संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था।
- इसी **स्थलीय क्षेत्र को "पेंजिया"** के नाम से जानते थे तथा शेष बचे हुए भाग को **(जल वाले क्षेत्र को) "पेंथालासा"** के नाम से जानते थे।
- नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-

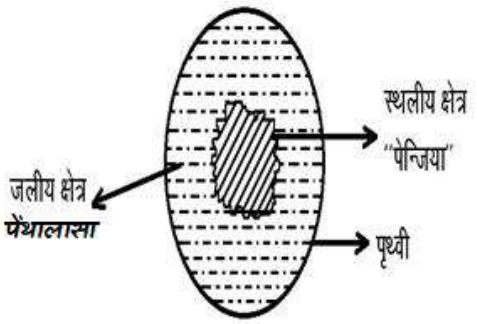

प्रिय छात्रों, पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पेंजिया (स्थलीय क्षेत्र) दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ। इस **स्थलीय क्षेत्र को "अंगारा लैंड /यूरेशियन प्लेट"** के नाम से जानते हैं।

इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को **"गोंडवाना लैंड"** 'प्लेट' के नाम से जानते हैं।

- दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "टेथिस सागर" के नाम से जानते थे।
- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-

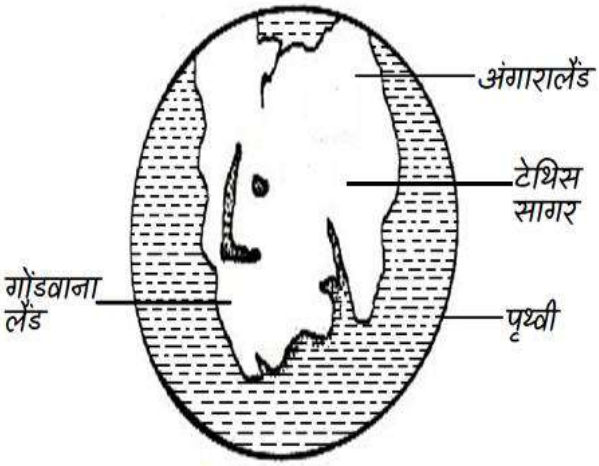

विशेष नोट:- राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीलें "टेथिस सागर" के अवशेष हैं तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वतमाला) एवं दक्षिण पूर्वी पठारी भाग "गोंडवाना लैंड" प्लेट के हिस्से हैं।

टेथिस सागर- टेथिस सागर को गोंडवाना लैंड प्लेट और यूरेशियन प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है जो कि एक छिछला और संकरा सागर था, और इसी में जमा अवसादों के प्लेट विवर्तनिकी के परिणाम स्वरुप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।

प्रिय छात्रों, अब तक हम अंगारा लैंड, गोंडवाना लैंड, टेथिस सागर, पेंजिया तथा पेंथाल्जा का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर चुके हैं। अब हम **पृथ्वी पर राजस्थान की** स्थिति, का अध्ययन करते हैं। नीचे दिए गए मानचित्रों को ध्यान से समझिए-

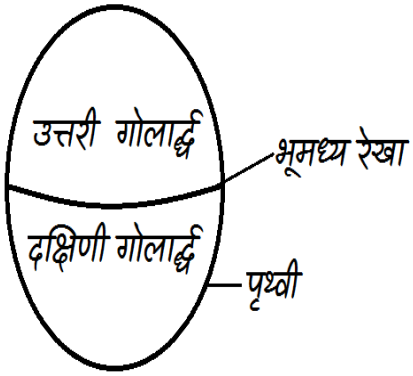

मानचित्र - 1

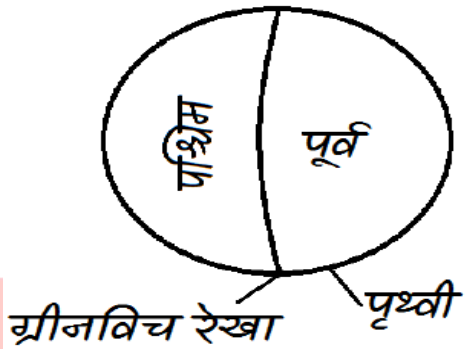

मानचित्र - 2

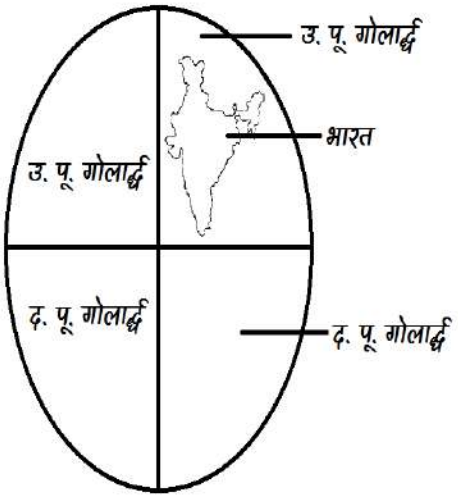

मानचित्र - 3

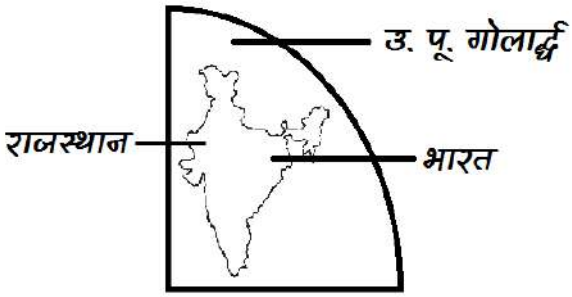

मानचित्र – 4

प्रिय छात्रों ऊपर दिए गए मानचित्र के बारे में एक बार समझते हैं।

- **पृथ्वी को भूमध्य रेखा** (विषुवत रेखा) से दो **भागों में** विभाजित किया गया है –

1. उत्तरी गोलार्द्ध
2. दक्षिणी गोलार्द्ध

इसे आप मानचित्र – 1 के माध्यम से समझ सकते हैं।

इसी प्रकार ग्रीनविच रेखा पृथ्वी को दो भागों में बांटती है–

1. पूर्वी क्षेत्र
2. पश्चिमी क्षेत्र

जिसे आप मानचित्र – 2 में देख सकते है।

नोट :–

1. विश्व (अर्थात् **पृथ्वी पर**) में राजस्थान **"उत्तर - पूर्व"** दिशा में स्थित है। (देखे मानचित्र– 3)
2. एशिया महाद्वीप में राजस्थान **"दक्षिणी -पश्चिम"** दिशा में स्थित है। (देखिए मानचित्र – 3,4)
3. **भारत में** राजस्थान **उत्तर - पश्चिम** में स्थित है। देखिए मानचित्र -4 (भारत)]

अब तक हमने देखा कि राजस्थान शब्द का उद्भव कैसे हुआ? तथा हम ने समझा कि पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति कहां पर है? अब हम अपने अगले बिंदु "राजस्थान का विस्तार" के बारे में पढ़ते हैं–

राजस्थान का विस्तार –इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए–

1. भूमध्य रेखा (विषुवत रेखा)
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश
5. देशांतर

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए–

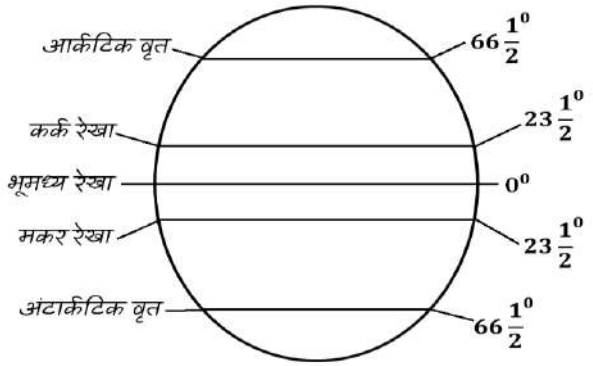

मानचित्र – 1

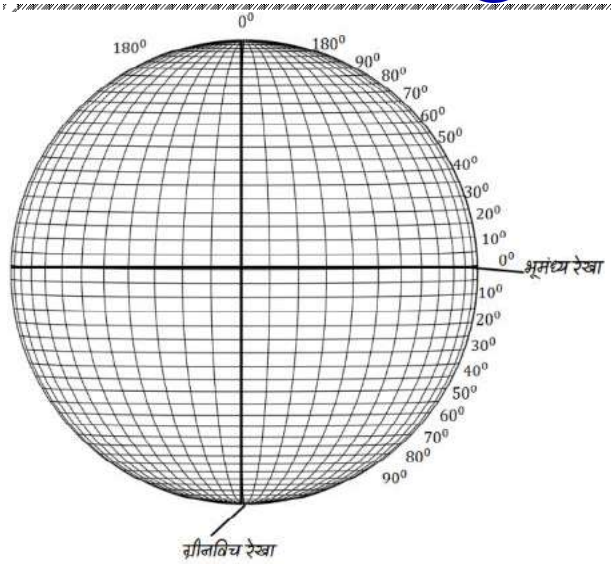

मानचित्र – 2

नोट - भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा है। यह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।

इस रेखा पर प्रायः वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे **विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा** कहा जाता है।

विषुवत रेखा के उत्तर में कर्क रेखा है व दक्षिण में मकर रेखा है।

नोट- पृथ्वी या ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "उत्तर - दक्षिण तथा पूर्व - पश्चिम"में विभाजित किया गया है। इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते है।

अक्षांश रेखाएँ - वह रेखाएं जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अर्थात् भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। **भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा** माना गया है। (देखें मानचित्र -1)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90° उत्तरी गोलार्द्ध में और 90° दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180° है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181° होती है।

देशांतर रेखाएं- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360° रेखाओं को देशांतर रेखाएँ कहा जाता है।

पृथ्वी के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली और उत्तर - दक्षिण दिशा में खींची गयी। **काल्पनिक रेखाओं को याम्योत्तर , देशान्तर , मध्यान्तर रेखाएं कहते हैं।**

- ग्रीनविच, (जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है) से गुजरने वाली याम्योत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस यामोत्तर को प्रमुख यामोत्तर कहते हैं।
- इसका मान देशांतर है तथा यहाँ से हम 180° डिग्री पूर्व या 180° डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

नोट –उपर्युक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक ''भारत एवं विश्व का भूगोल पढ़े"।

राजस्थान का **अक्षांशीय विस्तार 23°03" से 30°12" उत्तरी अक्षांश** ही तक है जिसका **अंतर 7°09 मिनट** है। जबकि राजस्थान का **देशांतरीय विस्तार 69°30" से 78°17" पूर्वी देशांतर** है। जिसका अंतर **8°47 मिनट है।** (देखें मानचित्र A, B)

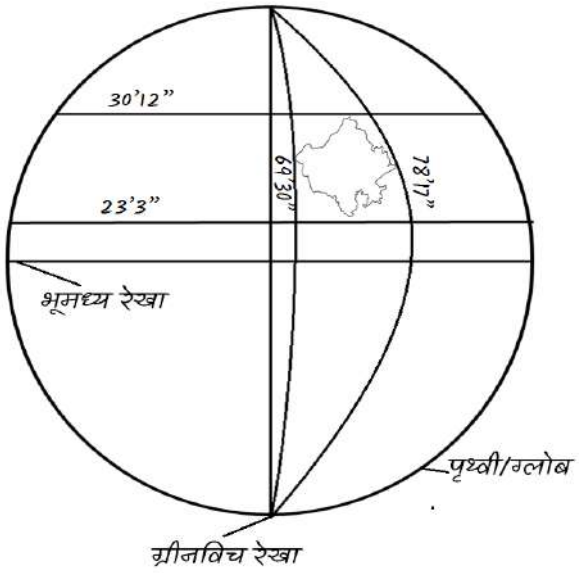

(मानचित्र-A)

<u>नोट-</u> राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार **<u>7°9"(30°12"- 23°03")</u>** है तथा कुल देशांतरीय विस्तार **<u>8°47" (78°17" - 69°30")</u>** है।

1° = 4 मिनट

1" =111.4 किलोमीटर होता है।

- राजस्थान का कुल **क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर** है जो कि संपूर्ण भारत का **10.41%** है।
- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है।

प्रश्न.1 भारत के कुल भू – भाग का कितना प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान में है। (RAS-2016)

(A) 10.4 प्रतिशत **(B) 7.9 प्रतिशत**

(c) 13.3 प्रतिशत **(D) 11.4 प्रतिशत**

उत्तर :- (A)

- जो हिमाच्छादित हिमालय की ऊंचाइयों से शुरू होकर दक्षिण के विषुवतीय वर्षा वनों तक फैला हुआ है। जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।
- 1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का **सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश** था, लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग होने हो जाने पर भारत का **सबसे बड़ा राज्य** (क्षेत्रफल की दृष्टि से) राजस्थान बन गया।

2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 68,548,437 थी। जो कि कुल देश की जनसंख्या का **5.67%** है।

➢ **कर्क रेखा राजस्थान में स्थितः-**

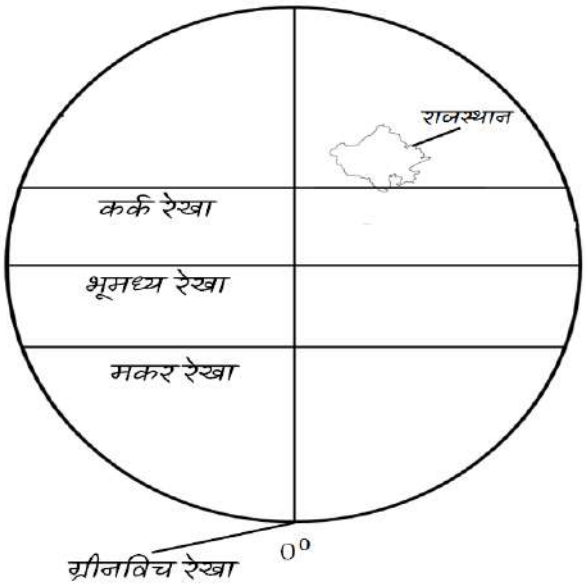

<u>कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-</u>

1. गुजरात 2. राजस्थान 3. मध्यप्रदेश 4. छत्तीसगढ़ 5. झारखंड 6. पश्चिम बंगाल 7. त्रिपुरा 8. मिजोरम

राजस्थान में **कर्क रेखा बाँसवाड़ा** जिले के मध्य से **कुशलगढ़ तहसील** से गुजरती है इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिले को भी स्पर्श करती है अर्थात् **कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।**

राजस्थान में कर्क रेखा की कुल **लंबाई 26 किलोमीटर** है। राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।

राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बाँसवाड़ा है।

भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती हैं, अतः वहाँ पर तापमान अधिक होता है। जैसे - जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है, वैसे - वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।

राजस्थान में **बाँसवाड़ा जिले में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी** पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

पंजाब (89 किमी०)

- राजस्थान के दो जिलों की सीमा पंजाब से लगती है तथा पंजाब के दो जिले फाजिल्का व मुक्तसर की सीमा राजस्थान से लगती है ।
- पंजाब के साथ सर्वाधिक सीमा श्रीगंगानगर व न्यूनतम सीमा हनुमानगढ़ की लगती है।
- पंजाब सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा दूर जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ है।
- पंजाब सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला श्रीगंगानगर व छोटा जिला हनुमानगढ़ है।

शोर्ट ट्रिक

पंजाब की सीमा से सटे राजस्थान राज्य के जिले है।

''श्री हनुमान''

सूत्र		जिला
श्री	-	श्रीगंगानगर
हनुमान	-	हनुमानगढ़

हरियाणा (1262 किमी०)

- राजस्थान के 7 जिलों की सीमा हरियाणा के 7 जिलों सिरसा, फतेहबाद, हिसार, भिवाणी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, मेवात से लगती है।
- हरियाणा के साथ सर्वाधिक सीमा हनुमानगढ़ व न्यूनतम सीमा जयपुर की लगती है । तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय हनुमानगढ़ व दूर मुख्यालय जयपुर का है।
- हरियाणा सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला चुरू व कोटा जिला झुंझुनू है ।
- मेवात (नुह) नव निर्मित जिला है जो राजस्थान के अलवर जिले को छूता है।

शोर्ट ट्रिक

हरियाणा की सीमा से लगने वाले राजस्थान के जिले है।

"जय भरत असी झुंझुन्ने चुरा हनु से"

सूत्र		जिला
जय	-	जयपुर
भरत	-	भरतपुर
अ	-	अलवर
सी	-	सीकर
झुंझुन्ने	-	झुंझुनू
चुरा	-	चुरू
हनु	-	हनुमान

राजस्थान की सीमा से लगने वाले हरियाणा के जिले है ।

"हिम फसि भि गुड़ रेवड़ी"

सूत्र		जिला
हि	-	हिसार
म	-	महेन्द्रगढ़
फ	-	फतेहाबाद
सि	-	सिरसा
भि	-	भिवानी
गुड़	-	गुड़ गाँव
रेवड़ी	-	रेवाड़ी

उत्तरप्रदेश (877 किमी०)

- राजस्थान के दो जिलों की सीमा उत्तरप्रदेश के दो जिलों (मथुरा व आगरा) से लगती है।
- उत्तरप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा भरतपुर व न्यूनतम सीमा धौलपुर की लगती है।
- उत्तरप्रदेश की सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय भरतपुर व दूर जिला मुख्यालय धौलपुर है।
- उत्तरप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भरतपुर व छोटा जिला धौलपुर है।

मध्यप्रदेश (1600 किमी०)

- राजस्थान के 10 जिलों की सीमा मध्यप्रदेश के 10 जिलों की सीमा से लगती है।(झाबुआ, रतलाम, मंदसौर, निमच, अगरमालवा, राजगढ, गुना, शिवपुरी, श्यौपुर, मुरैना) मध्यप्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा झालावाड़ व न्यूनतम भीलवाड़ा की लगती है तथा सीमा के नजदीक मुख्यालय धौलपुर व दूर जिला मुख्यालय भीलवाड़ा है।
- मध्यप्रदेश की सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला भीलवाड़ा व छोटा जिला धौलपुर है।

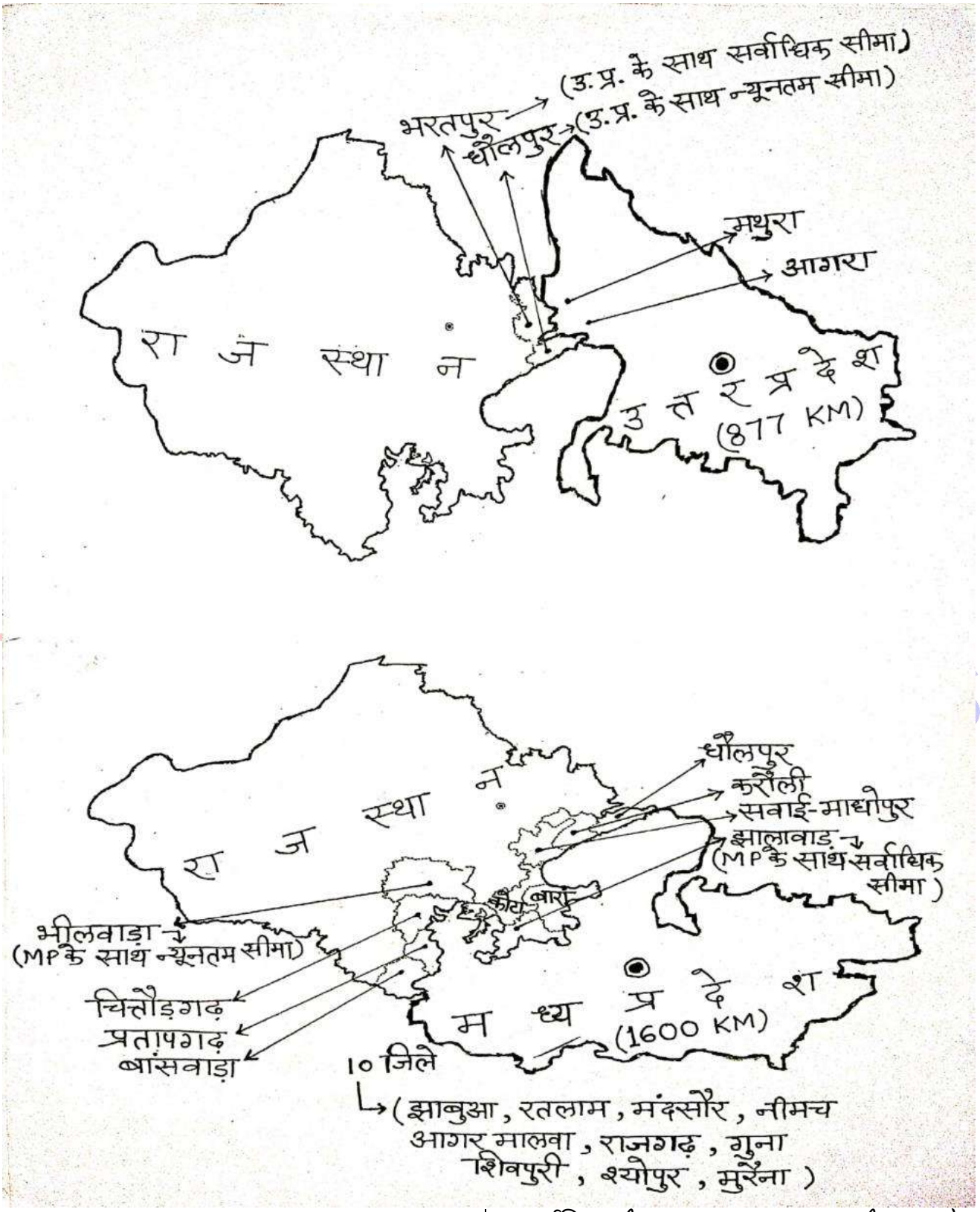

गुजरात (1022 किमी.)

- राजस्थान के 6 जिलों की सीमा गुजरात के 6 जिलों से लगती है। (कच्छ, बनासकांठा, साबरकांठा, अरावली, माहीसागर, दाहोद)गुजरात के साथ सर्वाधिक सीमा उदयपुर व न्यूनतम सीमा बाड़मेर की लगती है तथा सीमा के नजदीक जिला मुख्यालय डूंगरपुर व दूर मुख्यालय बाड़मेर है।
- गुजरात सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा जिला बाड़मेर व छोटा जिला डूंगरपुर है।

- राजस्थान के पांच पड़ोसी राज्य है । पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात

शोर्ट ट्रिक

गुजरात की सीमा से लगने वाले राजस्थान के जिले है।

"उदय डूंगर पर बासि बाड़ जला"

सूत्र		जिला
उदय	-	उदयपुर
डूँगर पर	-	डूंगरपुर
बां	-	बाँसवाड़ा
सि	-	सिरोही
बाड़	-	बाड़मेर
जला	-	जालौर

राजस्थान की सीमा से लगने वाले गुजरात के जिले है।

"सादा पँचक बना"

सूत्र		जिला
सा	-	साबरकाठा
दा	-	दाहोद
पंच	-	पंचमहल
क	-	कच्छ
बना	-	बनासकंठा

अन्य तथ्य

26 जनवरी 1950 को संवैधानिक रूप से हमारे राज्य का नाम राजस्थान पड़ा।

राजस्थान अपने वर्तमान स्वरूप में 1 नवम्बर 1956 को आया । इस समय राजस्थान में कुल 26 जिले थे।

26 वाँ जिला – अजमेर - 1 नवम्बर, 1956

27 वाँ जिला – धौलपुर - 15 अप्रैल, 1982, यह भरतपुर से अलग होकर नया जिला बना।

28 वाँ जिला- बारां - 10 अप्रैल, 1991, यह कोटा से अलग हो कर नया जिला बना।

29 वाँ जिला – दौसा - 10 अप्रैल, 1991, यह जयपुर से अलग होकर नया जिला बना।

30 वाँ जिला राजसंमद – 10 अप्रैल, 1991, यह उदयपुर से अलग होकर नया जिला बना।

शोर्ट ट्रिक

10 अप्रैल 1991 को बने जिलों के नाम है।

"दोबारा राजा बना"

सूत्र		जिला
दौ	-	दौसा
बारा	-	बारां
राजा	-	राजसमन्द

31 वाँ जिला – हनुमानगढ़ - 12 जुलाई, 1994, यह श्रीगंगानगर से अलग होकर नया जिला बना।

32 वाँ जिला करौली 19 जुलाई, 1997, यह सवाई माधोपुर से अलग होकर नया जिला बना।

33 वाँ जिला – प्रतापगढ़ - 26 जनवरी, 2008, यह तीन जिलों से अलग होकर नया जिला बना।

1. चित्तौड़गढ़ - छोटीसादड़ी, आरनोद, प्रतापगढ़ तहसील
2. उदयपुर - धारियाबाद तहसील
3. बाँसवाड़ा- पीपलखुट तहसील

- प्रतापगढ़ जिला परमेश चन्द कमेटी की सिफारिश पर बनाया गया ।
- प्रतापगढ़ जिले ने अपना कार्य 1 अप्रैल, 2008 से शुरू किया ।
- **प्रतापगढ़ को प्राचीन काल में कांठल व देवला / देवलीया के नाम से** जाना जाता था।

शोर्ट ट्रिक

प्रतापगढ़ का गठन करने के लिए बाँस डूंगर पर चढ़ गये थे वे जिद पर अडे थे फिर प्रतापगढ़ का गठन निम्न जिलों को मिलाकर किया गया ।

"बांस चढ़ा डूंगर पर"

सूत्र		जिला
बांस	-	**बाँसवाड़ा**
चढ़ा	-	**चित्तौडगढ़**

डूंगरपर - डूंगरपुर

- पाली जिला राजस्थान के सर्वाधिक 8 जिलों के साथ सीमा बनाता है।

पाली जिले के साथ जिन की सीमा लगती है :-

"जोरा उसी बड़े जाले से आना आना"

सूत्र		जिले
जो	-	जोधपुर
रा	-	राजसमन्द
उ	-	उदयपुर
सी	-	सिरोही
बड़े	-	बाड़मेर
जाले	-	जालौर
आ	-	अजमेर
ना	-	नागौर

राजस्थान का श्रीगंगानगर शहर पहले एक बड़ा गाँव हुआ करता था, जिसका **नाम रामनगर** था।

राजस्थान का **क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा** जिला **जैसलमेर (38401 वर्ग किमी०)** है जो **भारत का तीसरा बड़ा जिला है।** (प्रथम कच्छ, द्वितीय- लद्दाख या लेह)।

राजस्थान के **जैसलमेर जिले को सात दिशाओं वाले बहभुज की संज्ञा दी है।**

राजस्थान के **सीकर जिले की आकृति अर्द्धचन्द्र या प्याले के समान है।**

राजस्थान के **टोंक** जिले की आकृति **पतंगाकार मानी गई है।**

राजस्थान के **अजमेर** जिले की आकृति **त्रिभुजाकार** मानी गई है।

राजस्थान के **चित्तौड़गढ़** जिले की आकृति **घोड़े के नाल** के समान है।

राजस्थान के दो जिले खण्डित जिले हैं - 1. अजमेर - टॉडगढ़ 2. चित्तौड़गढ़ - रावतभाटा

शोर्ट ट्रिक

राजस्थान में सर्वाधिक शहरी व न्यूनतम शहरी जनसंख्या वाले जिलें हैं।

"जय प्रताप"

सूत्र		जिला
जय	-	जयपुर
प्रताप	-	प्रतापगढ़

राजस्थान में सर्वाधिक शहरी व न्यूनतम शहरी जनसंख्या वृद्धि वाले जिलें हैं।

"दोस्त डूंगरू"

सूत्र		जिला
दोस्त	-	दौसा
डूंगरू	-	डूंगरपुर

राजस्थान में न्यूनतम पुरुष साक्षरता वाले जिलों के नाम हैं।

"प्रबा सिर जला बाडे में"

सूत्र		जिला
प्र	-	प्रतापगढ़
बा	-	बाँसवाड़ा
सिर	-	सिरोही
जला	-	जालौर
बाडे में	-	बाड़मेर

राजस्थान में सर्वाधिक लिंगानुपात वाले 5 जिलों के नाम हैं।

"डूंगर राज का पाली पर बोस"

सूत्र		जिला
डूंगर	-	डूंगरपुर (994)
राज	-	राजसमन्द (990)
पाली	-	पाली (987)
पर	-	प्रतापगढ़ (983)
बाँस (980)	-	बाँसवाड़ा

राजस्थान में न्यूनतम लिंगानुपात वाले जिलों के नाम हैं ।

"धोलू जैसा करो भरत गंगा"

सूत्र		जिला
धोलू	-	धौलपुर
जैसा	-	जैसलमेर
करो	-	करौली
भरत	-	भरतपुर
गंगा	-	श्रीगंगानगर

राजस्थान में सर्वाधिक शहरी साक्षरता व न्यूनतम शहरी साक्षरता वाले जिलों के नाम हैं।

"उदय जला जला"

सूत्र		जिला
उदय	-	उदयपुर (सर्वाधिक)
जला	-	जालौर (न्यूनतम)

राजस्थान के संभाग

शोर्ट ट्रिक

राजस्थान के संभागो के नाम हैं।

"आज जोज, उदय और बीका को भरतपुर ले गया संभाग घुमाने"

सूत्र		राजस्थान के संभाग
आज	-	अजमेर
जो	-	जोधपुर
ज	-	जयपुर
उदय	-	उदयपुर
बीका	-	बीकानेर
को	-	कोटा
भरतपुर	-	भरतपुर

1. **जयपुर संभाग**- जयपुर, दौसा, सीकर, अलवर, झुंझुनू
2. **जोधपुर संभाग** - जोधपुर, जालौर, पाली, बाड़मेर, सिरोही, जैसलमेर
3. **भरतपुर संभाग** - भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर
4. **अजमेर संभाग** - अजमेर, भीलवाड़ा, टोंक, नागौर
5. **कोटा संभाग** - कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़
6. **बीकानेर संभाग** - बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू
7. **उदयपुर संभाग** - उदयपुर, राजसंमद, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़

उदयपुर संभाग में आने वाले जिलों के नाम है।

"उदय राज का बांस चढ़ा डूंगर पर"

सूत्र		उदयपुर के संभाग
उदय	-	उदयपुर
राज	-	राजसमंद
बांस	-	बाँसवाड़ा
चढ़ा	-	चित्तौड़गढ़
डूंगर	-	डूंगरपुर
पर	-	प्रतापगढ़

बीकानेर संभाग में जिलों के नाम हैं ।

"बीका गंगा चुहा है"

सूत्र		बीकानेर के संभाग
बीका	-	बीकानेर
गंगा	-	गंगानगर
चुहा	-	चूरू
है	-	हनुमानगढ़

जयपुर संभाग में जिलों के नाम हैं।

"जय झुनझुन दास आलसी है"

सूत्र		जयपुर के संभाग
जय	-	जयपुर

झुनझुन	-	झुंझुनूं
दास	-	दौसा
आल	-	अलवर
सी	-	सीकर

कोटा संभाग में जिलों के नाम हैं।

"बाबू को झूला दे दें"

सूत्र		कोटा के संभाग
बा	-	बारां
बू	-	बूंदी
को	-	कोटा
झूला	-	झालावाड़

अंतर्राष्ट्रीय सीमा

अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाले संभाग - बीकानेर व जोधपुर

सर्वाधिक अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग - जोधपुर

न्यूनतम अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाने वाला संभाग - बीकानेर

अंतर्राष्ट्रीय सीमा के नजदीक संभागीय मुख्यालय - बीकानेर

अंतर्राष्ट्रीय सीमा से दूर संभागीय मुख्यालय - जोधपुर

अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा संभाग - जोधपुर

अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा संभाग- बीकानेर

शोर्ट ट्रिक

राजस्थान के वे जिले जो अंतर्राष्ट्रीय और अंतर्राज्यीय नहीं बनाते हैं।

"अपना राज जो हैं BT"

सूत्र		जिला
अ	-	अजमेर
प	-	पाली
ना	-	नागौर
राज	-	राजसमन्द
जो	-	जोधपुर
B	-	बूंदी
T	-	टोंक
D	-	दौसा

अंतर्राज्यीय सीमा

अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाले संभाग - सात

सर्वाधिक अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग - उदयपुर

न्यूनतम अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग - अजमेर

अंतर्राज्यीय सीमा के नजदीक संभागीय मुख्यालय - भरतपुर

अंतर्राज्यीय सीमा से दूर संभागीय मुख्यालय - जोधपुर

अंतर्राज्यीय सीमा पर क्षेत्रफल में बड़ा संभाग - जोधपुर

अंतर्राज्यीय सीमा पर क्षेत्रफल में छोटा संभाग - भरतपुर

दो बार अंतर्राज्यीय सीमा बनाने वाला संभाग - उदयपुर (चित्तौड़गढ़ के दो भाग)

राजस्थान का मध्यवर्ती संभाग - अजमेर

सभी 6 संभागों की सीमा से लगने वाला संभाग - अजमेर

सर्वाधिक नदियों वाला संभाग - कोटा (नदियाँ वाला जिला चित्तौड़गढ़)

सबसे कम नदियों वाला संभाग - बीकानेर (बीकानेर व चुरू जिले में कोई नदी नहीं बहती है)

- राजस्थान में **संभागीय व्यवस्था की शुरुआत 1949 में हीरालाल शास्त्री** की सरकार द्वारा की गई थी।
- अप्रैल, 1962 में मोहनलाल सुखाड़िया के सरकार में संभागीय व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया।

सारांश

- राजस्थान के इतिहास का पितामाह "कर्नल जेम्स टॉड" को कहा जाता है।
- भारत के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति "उत्तर - पश्चिम" है।
- अरावली को राजस्थान की "जल विभाजक रेखा" कहा जाता है, क्योंकि यह बंगाल की खाड़ी व अरब सागर के अपवाह तंत्र को अलग करती है।
- राजस्थान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा "रेड क्लिफ रेखा" है, जो भारत व पाकिस्तान को अलग करती है।
- राजस्थान के जोधपुर जिले को "सन सिटी" कहा जाता है।
- थार के रेगिस्तान का 58% भाग राजस्थान में पाया जाता है।
- राजस्थान का एकमात्र जीवाश्म पार्क आँकल गांव (जैसलमेर) में है।
- राजस्थान का नवीनतम 33 वाँ जिला "प्रतापगढ़" बना, जो कि चित्तौड़गढ़, उदयपुर, बांसवाड़ा से अलग हुआ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा जिला जैसलमेर है, तथा सबसे छोटा जिला धौलपुर है।
- पाली जिला अन्य जिलों के साथ सीमा बनाता है जो कि सर्वाधिक है।
- राजस्थान में सात संभाग हैं। तथा सभी 6 संभागों से सीमा बनाने वाले संभाग अजमेर है।
- सबसे नवीनतम संभाग "भरतपुर संभाग" है।
- राजस्थान का वर्तमान स्वरूप 1 नवंबर 1956 को आया जिसमें कुल 26 जिले थे।
- 30 मार्च को राजस्थान दिवस मनाया जाता है।
- उदयपुर की पहाड़ियों को "गिरवा की पहाड़ियाँ" कहते हैं।
- अरावली को "राजस्थान का योजना प्रदेश" भी कहा जाता है।
- उदयपुर में जरगा व रागा पहाड़ियों के बीच का क्षेत्र "देशहरों" कहलाता है।
- माही नदी को "कांठल की गंगा" भी कहा जाता है।
- सेवण घास मुख्यतः जैसलमेर में पोकरण से मोहनगढ़ तक पाई जाती है। इसे "गोंडावण की शरणस्थली" भी कहते हैं।
- राजस्थान में "मरु त्रिकोण" में शामिल जिले जोधपुर, बीकानेर तथा जैसलमेर हैं।
- तीर्थों का मामा या कोंकण तीर्थ "पुष्कर" को जबकि तीर्थों का भांजा मचकुंड (धौलपुर) को कहा जाता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. राजस्थान की अंतर्राष्ट्रीय सीमा कितनी लंबी है?

A. 1070 KM B. 1085 KM

C. 1065 KM D. 1060 KM

उत्तर - (A)

2. राजस्थान में क्षेत्रफल की दृष्टि से जिलों का सही घटता हुआ क्रम है -

A. जैसलमेर > बीकानेर > जोधपुर > बाड़मेर

B. जैसलमेर > जोधपुर > बीकानेर > बाड़मेर

C. जैसलमेर > बाड़मेर > बीकानेर > जोधपुर

D. जैसलमेर > जोधपुर > बाड़मेर > बीकानेर

उत्तर - (C)

3. राजस्थान के संलग्न जिले हैं?

A. सिरोही, पाली, नागौर

B. चूरु, झुंझुनूं, जयपुर

C. सिरोही, बाड़मेर, जैसलमेर

D. झालावाड़, बूंदी, टोंक

उत्तर - (A)

4. सर्वाधिक लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा किस जिले की है?

A. बाड़मेर B. जैसलमेर

C. बीकानेर D. गंगानगर

उत्तर – B

5. कर्क रेखा राज्य के किन जिलों से होकर गुजरती हैं?

A. बारां व झालावाड़ B. बाड़मेर व चूरू

C. बांसवाड़ा व डूंगरपुर D. बूंदी व भीलवाड़ा

उत्तर – C

6. राजस्थान के किस जिले से अधिकतम जिलों की सीमाएँ स्पर्श करती है, वह है?

A. अजमेर B. पाली

C. भीलवाड़ा D. नागौर

उत्तर – B

7. निम्न में से राजस्थान का कौन सा शहर पाकिस्तान सीमा के निकट है?

A. बीकानेर B. जैसलमेर

C. गंगानगर D. हनुमानगढ़

उत्तर – C

8. राजस्थान में कौन सा क्षेत्र मालव क्षेत्र के नाम से जाना जाता है?

A. बांसवाड़ा - प्रतापगढ़ B. डूंगरपुर – प्रतापगढ़

C. झालावाड़ - प्रतापगढ़ D. बूंदी - झालावाड़

उत्तर – C

9. राजस्थान का प्रवेश द्वार किसे कहा जाता हैं?

A. झालावाड़ B. धौलपुर

C. हनुमानगढ़ D. भरतपुर

उत्तर – D

10. मध्य प्रदेश का वह जिला जो तीन ओर से राजस्थान से घिरा हुआ है?

A. नीमच B. रतलाम

C. मंदसौर D.श्योपुर

उत्तर - A

अध्याय – 2

प्रमुख भू – आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं

नोटः- प्रिय पाठकों जैसा कि आपको ज्ञात है कि राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इस विशाल राज्य में रेगिस्तान, नदियाँ, पर्वत एवं पहाडियाँ, पठार अलग - अलग क्षेत्रों में पाये जाते हैं । इनकी वजह से राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है-

1. पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश – वह क्षेत्र जहाँ पर रेगिस्तान पाया जाता हैं
2. अरावली पर्वतमाला - वह क्षेत्र जहाँ पर अरावली पर्वतमाला का विस्तार है।
3. पूर्वी मैदानी प्रदेश- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश **दोमट व जलोढ़ मिट्टी** पाई जाती हैं
4. दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश - वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश मात्रा में **काली मिट्टी** पाई जाती है, इस क्षेत्र को **हाड़ौती का पठार** भी कहते हैं।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

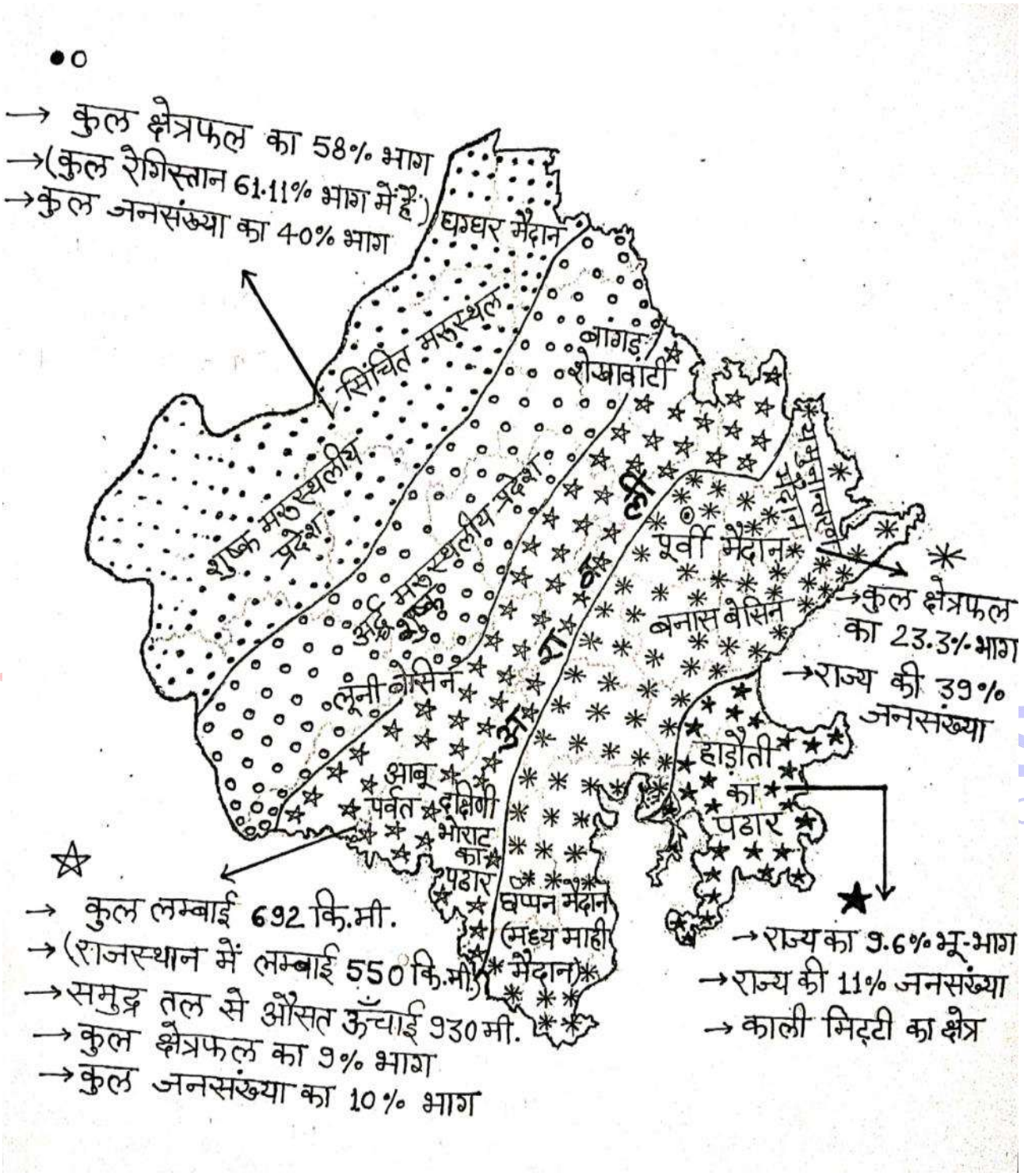

प्रिय छात्रों, इन चारों प्रदेशों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार हैं-

- ***<u>पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश</u>:-***

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का अवशेष है, और अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैंड का हिस्सा है।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश का सामान्य परिचय :-

वर्तमान में रेगिस्तान का विस्तार राज्य के कुल 61.11 प्रतिशत हिस्से पर है।

नोटः- *पहले ये क्षेत्र केवल 58 प्रतिशत भाग पर ही सीमित था, लेकिन वर्तमान में अरावली पर्वतमाला*

के कटी – फटी होने के कारण मरुस्थल का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रहा है।

अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में कुल 12 जिले स्थित है, उनमें से **12 जिलों में रेगिस्तान का विस्तार** है । यह जिले निम्न प्रकार है-

1. बीकानेर संभाग - बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
2. जोधपुर संभाग - जोधपुर, जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर, पाली (अपवाद- सिरोही)
3. शेखावाटी क्षेत्र - सीकर, झुंझुनू
4. अजमेर संभाग – नागौर

नोटः – राज्य के सि**रोही जिले में मरुस्थल का विस्तार नहीं है** अर्थात् अरावली के पश्चिम में स्थित **13 जिलों में से सिरोही एक मात्र ऐसा** जिला है, जो मरुस्थलीय जिलों की श्रेणी में शामिल नहीं है।

- **थार का रेगिस्तान** राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग और पाकिस्तान में सिंध तथा पंजाब तक फैला है।
- यह **उत्तर – पश्चिम में 645 किमी० लम्बा और 360 किमी० चौड़ा है** ।
- इस का सामान्य ढ़ाल **उत्तर – पूर्व से दक्षिण – पश्चिम** की ओर है ।
- मरुस्थल का **ऊँचा उठा हुआ उत्तर -पूर्वी भाग 'थली'तथा दक्षिण-पश्चिम भाग नीचे का 'तली** 'कहलाता है।

इस मरुस्थलीय क्षेत्र में राज्य की कुल **जनसंख्या का लगभग 40** प्रतिशत हिस्सा निवास करता है।

यह **विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल** है तथा इसके अलावा यह विश्व में सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरुस्थल भी है।

प्रश्न.1 भारत के थार मरुस्थल का कितना भाग राजस्थान में है? (RAS - 2016)

A. 40 प्रतिशत **B. 60 प्रतिशत**

C. 80 प्रतिशत **D. 90 प्रतिशत**

उत्तर - B

- थार के मरुस्थल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ है, कि यह **विश्व का एक मात्र** ऐसा मरुस्थल है, जिसके निर्माण में **दक्षिण पश्चिम मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान** है।
- थार का मरुस्थल भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र को भी नियंत्रित करता है ।
- ग्रीष्म काल में तेज गर्मी के कारण इस प्रदेश में न्यून वायु दाब केन्द्र विकसित हो जाता है। जो दक्षिण - पश्चिमी मानसूनी हवाओं को आकर्षित करता है। यह हवायें सम्पूर्ण प्रायद्वीप में वर्षा करती है ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून को आकर्षित करने में इस मरुस्थल की उपस्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस क्षेत्र में शुष्क एवं अत्यंत विषम जलवायु पाई जाती है और तापमान गर्मियों में अत्यधिक (49° C तक) तथा सर्दियों में न्यूनतम (3° C तक) रहता है।

आँकल जीवाश्म पार्क, जलोद्भिद तलछट व लिग्नाइट, खनिज तेल इत्यादि से इस तथ्य की पुष्टि होती है, कि **थार का मरुस्थल 'पर्माकार्बोनिफेरस युग'** में टेथिस सागर का हिस्सा था।

नोटः-मरुस्थलीकरण का मूल कारण :-

मरुस्थलीकरण की समस्या सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। विश्व की कुल जनसंख्या का छठवाँ हिस्सा मरुस्थलीकरण की समस्या से प्रभावित है।

सन् 1952 में"Symposia on Indian Desert" का आयोजन किया गया जिसमें थार के मरुस्थल की उत्पत्ति पूर्व में इसका विस्तार आदि पर विस्तृत चर्चा की गई है।

<u>क्या होता है मरुस्थलीकरण?</u>

- उपजाऊ एवं अमरुस्थलीय भूमि का क्रमिक रूप शुष्क प्रदेश अथवा मरुस्थल में परिवर्तित हो जाने की प्रक्रिया ही मरुस्थलीकरण है ।
- मरुस्थलीकरण प्रकृति की परिघटना है जो **जलवायवीय परिवर्तन व दोष पूर्ण भूमि उपयोग के कारण होती है।**

शुष्क मरुस्थल

उत्तर - पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ वनस्पति नगण्य या नाम मात्र की पाई जाती है, तथा वर्षा बहुत ही कम मात्रा में होती है। इस क्षेत्र में **वर्षा 0 से 25 से.मी.** तक होती है।

इस क्षेत्र में **कांटेदार झाड़ियां** बहुतायात में पायी जाती है।

1. बालूका स्तूप युक्त प्रदेश :- उत्तर पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ धोरे / टीले या टीबों का निर्माण होता है। यह राजस्थान के कुल मरुस्थल का 48.5 प्रतिशत है ।

बालूका स्तूप युक्त प्रदेश :-

बालूका स्तूप युक्त प्रदेश के अन्तर्गत राज्य की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित चारों जिले श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर तथा चुरू व पश्चिमी नागौर एवं जोधपुर जिला शामिल है।

2. बालूका स्तूप मुक्त प्रदेश:- उत्तर - पश्चिम मरुस्थल का वह क्षेत्र जहाँ धोरों का निर्माण नहीं होता है अर्थात् वह क्षेत्र जो चट्टानों से अच्छादित है बालूका स्तूप मुक्त प्रदेश है। यह राजस्थान के कुल मरुस्थल का 51.5 प्रतिशत भाग है ।

इस क्षेत्र में **जुरासिक काल के जीवाश्म के अवशेष पाए जाते है** इसका उदाहरण **जैसलमेर जिले स्थित आँकल गाँव में 'वुड फॉसिल पार्क' है।**

नोट:- राज्य का **सबसे न्यूनतम वर्षा** वाला स्थान **सम गाँव जैसलमेर** जिले में स्थित है तथा यहीं गाँव (सम गाँव) राज्य का न्यूनतम वनस्पति या **वनस्पति रहित क्षेत्र है।**

इस क्षेत्र में जैसलमेर जिले की पोकरण तहसील, बाड़मेर जिले की छप्पन की पहाडियाँ, फलोदी तहसील का कुछ क्षेत्र इस प्रदेश के अन्तर्गत आता है।

1. बालूका स्तूप :-

- पवन द्वारा जब मिट्टी का निक्षेपण या जमाव होता है, तो बनने वाली संरचना बालूका स्तूप कहलाती है। जिन्हें टीले या टीबे भी कहा जाता है। तथा जैसलमेर की स्थानीय भाषा मे धरियन कहा जाता है।

बालूका स्तूप के प्रकार :-

1. बरखान :- पवन

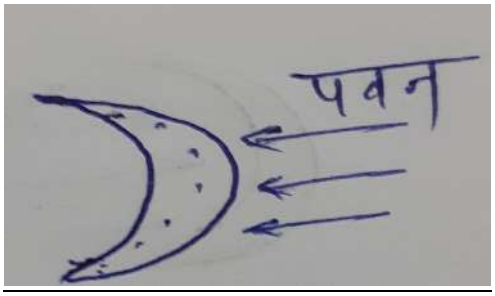

- यह अर्द्धचंद्राकार आकृति का होता है इसका विस्तार शेखावटी क्षेत्र में जाता है, जिसमें सर्वाधिक चूरू जिले में है।
- यह सर्वाधिक नुकसानदायी एवं सर्वाधिक अस्थिर प्रकृति के होते हैं।

2. अनुप्रस्थ :- पवन

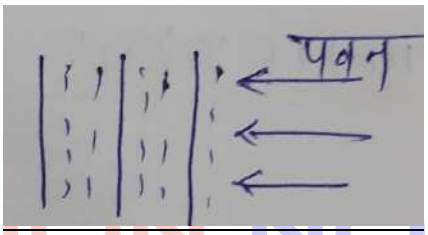

- ये हवा के लम्बवत् अर्थात् हवा के साथ समकोण पर बनने वाले स्तूप या टीले होते हैं।
- इनका विस्तार बाड़मेर तथा जोधपुर में पाया जाता है।

3. अनुदैर्ध्य / रेखीय :- पवन

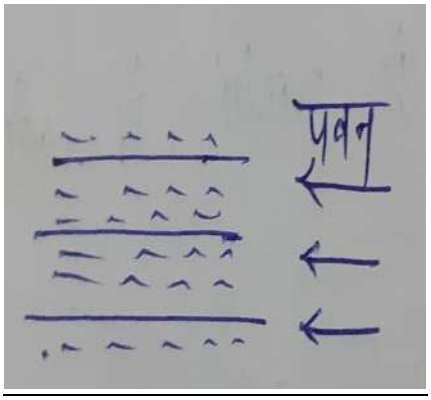

- ये हवा की दिशा के समानांतर बनने वाले स्तूप / टीले होते हैं। इनका विस्तार जैसलमेर जिले में मुख्यतः पाया जाता है।

4. तारानुमा बालूका स्तूप :- पवन

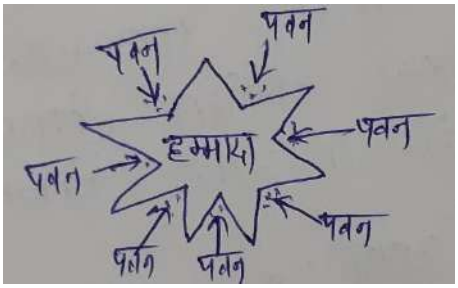

- यह रेतीले मरुस्थल में पाए जाते हैं, तथा इनका निर्माण अनियमित हवाओं द्वारा होता है। इनमें न्यूनतम तीन या अधिक भुजा होती है।
- इनका विस्तार सर्वाधिक जैसलमेर में तथा सूरतगढ़ (श्री गंगानगर) में मिलता है।

5. पैराबोलिक बालूका स्तूप :- पवन

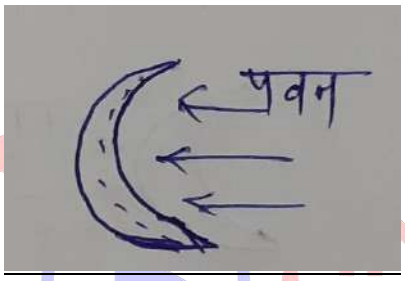

- ये बरखान के विपरीत या महिलाओं की हेयर पिन के समान बालूका स्तूप होते हैं। यह राजस्थान में सर्वाधिक तथा सभी जिलों में पाया जाने वाला बालूका स्तूप है।

6. सीफ बालूका स्तूप :- पवन

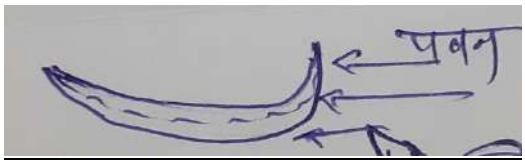

- बरखान के निर्माण के दौरान जब पवन की दिशा में परिवर्तन हो जाता है, तो बरखान की एक भुजा आगे की ओर बढ़ जाती है, जिसे सीफ कहा जाता है।

Note :-

- बरखान बालूका स्तूप अनुप्रस्थ स्तूपों के समान होते हैं।
- सीफ बालूका स्तूप अनुदैर्ध्य स्तूपों के समान होते हैं।

7. स्क्रब कॉपीस : (Shrub Copies)

- झाड़ियों व छोटी वनस्पतिय के पास बनने वाले छोटे बालूका स्तूप स्क्रब या सब्र कॉपीस कहलाते हैं।

Note :- झाड़ियों के पीछे बनने वाले बालूका स्तूप या चारों ओर बनने वाले नेबखा कहलाते हैं।

अर्द्ध शुष्क मरुस्थल

शुष्क मरुस्थल तथा अरावली के मध्य का क्षेत्र अर्द्ध शुष्क मरुस्थल का नाम से जाना जाता है।

यह प्रदेश **शुष्क मरुस्थल से 25 से.मी.** वर्षा रेखा द्वारा तथा **अरावली प्रदेश में 50 से.मी. वर्षा द्वारा विभाजित** होता है।

इस प्रदेश के अन्तर्गत पूर्वी चुरू, पश्चिमी झुंझुनूं, सीकर तथा जोधपुर, नागौर, पाली व अजमेर का अधिकांश भाग तथा बाड़मेर का दक्षिण - पूर्वी भाग शामिल है।

धरातल के आधार पर हम अर्द्ध शुष्क मरुस्थल को 4 भागों में बांट सकते है।

1. घग्घर का मैदान
2. शेखावाटी का अन्तः प्रवाह क्षेत्र
3. नागौर का पठार
4. लूनी बेसिन / गोंडवाना प्रदेश

प्रश्न – 2. निम्न में से थार मरुस्थल के भाग हैं ? (RAS - 2021)

a. गोड़वाड़ प्रदेश **b. शेखावाटी**

c. बनास का मैदान **d. घग्घर का मैदान**

A. (a) व (b) **B. (b) व (c)**

C. (a), (b), व (d) **D. (a), (c), व (d)**

उत्तर - C

घग्घर का मैदान

राज्य के श्रीगंगानगर तथा हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी का प्रवाह क्षेत्र को घग्घर का मैदान के नाम से जाना जाता है।

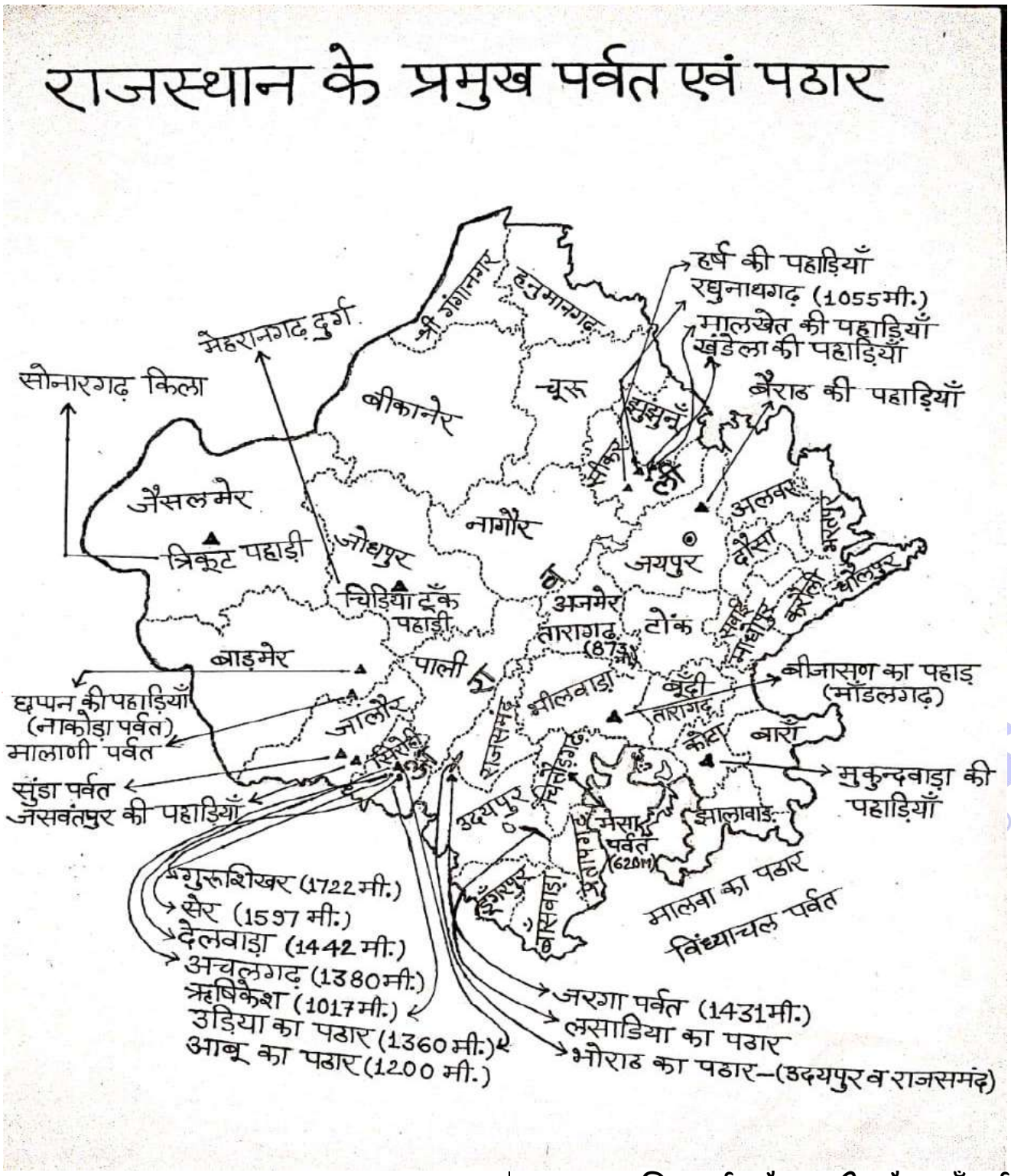

4. अरावली की कुल लंबाई का 79.48% **(लगभग 80%) भाग राजस्थान में** स्थित है जिसका **आकार एक वाद्ययंत्र "तानपुरे"** के समान है। अरावली पर्वतमाला की तुलना अमेरिका मे स्थित अल्पेशियन पर्वतों से की जाती है जो कि लगभग 60 से 55 करोड़ वर्ष पुराने हैं।

5. उत्पत्ति के आधार पर अरावली पर्वतमाला एक **वलित पर्वत** (जिसका विकास हो रहा है) तथा **वर्तमान में एक अवशिष्ट पर्वत है। इसकी औसत ऊँचाई पहले 5000 मीटर** थी जो कि **वर्तमान में 920 मीटर समुद्र तल से** है।

6. अरावली पर्वतमाला का विस्तार राज्य के 17 जिलों में है यह राज्य के लगभग बीच में स्थित है इसलिए राज्य को दो भागों में विभाजित करती है पूर्वी भाग व दक्षिणी भाग।

7. अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में 13 जिले आते हैं जिनमें से 12 में मरुस्थल है और एक जिला ऐसा है जो कि सिरोही है जिसमें मरुस्थल नहीं है अरावली के पश्चिम में लगभग 60% भू - भाग पर राज्य की 40% जनसंख्या निवास करती है।

8. अरावली के पूर्व में राज्य के 20 जिले आते हैं राजस्थान के कुल गैर मरुस्थलीय जिले 21 है जिनमें से अरावली के पूर्व में 20 तथा एक सिरोही है।

9. **अरावली का सर्वाधिक विस्तार उदयपुर जिले में है** तथा **सबसे कम विस्तार वाला जिला अजमेर** है और **अरावली पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी "गुरु शिखर"** है और जब कि **सबसे नीचे चोटी "अजमेर जिले" में पुष्कर घाटी है।**

- **गुरुशिखर जिसे गुरुमाथा** भी कहा जाता है। हिमालय पर्वत के माउंट एवरेस्ट तथा पश्चिमी घाट के नीलगिरी पर्वत के मध्य की सबसे ऊंची चोटी है ।
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने यहाँ पर संतों को तपस्या करते हुए देखा था इससे प्रभावित होकर कर्नल जेम्स टॉड ने **इसे संतो का शिखर का नाम दिया है** इसकी **औसत ऊँचाई 1722 मीटर** है।
- इसकी चोटी पर दत्तात्रेय ऋषि का मंदिर बना हुआ है ।
- यदि इस मंदिर की ऊँचाई को शामिल करें तो गुरु शिखर की कुल ऊँचाई 1727 मीटर होती है ।
- गुरुशिखर के नीचे **राज्य का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल "माउंट आबू" स्थित है।**

10. अरावली पर्वतमाला राज्य की नदियों को दो भागों में विभाजित करती है पश्चिमी भाग और पूर्वी भाग । **अरावली के पश्चिम में बहने** वाली नदियाँ अपना जल **अरब सागर को** तथा अरावली के **पूर्व में बहने वाली नदियाँ** अपना जल **बंगाल की खाड़ी को लेकर** जाते हैं।

11. **अरावली पर्वतमाला पश्चिमी मरुस्थल को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकती है** जैसा कि आपको पता है मरुस्थल अभी भी लगातार फैल रहा है।

12. अरावली पर्वतमाला **बंगाल की खाड़ी से आने वाले मानसून को रोककर वर्षा करने में सहायक** भी होती है लेकिन अरावली पर्वतमाला से होने वाला **"सबसे बड़ा नुकसान"** यह है कि अरावली पर्वतमाला की स्थिति **अरब सागर के मानसून के समांतर होने के कारण यह बिना वर्षा किए ही गुजर जाता है** इसी वजह से राजस्थान में बहुत कम वर्षा होती है।

13. अरावली पर्वतमाला में पर्वतीय चट्टानों के टूटने से पर्वतीय मिट्टी का निर्माण होता है एवं जिस **पर्वतीय मिट्टी में चूने की अधिक मात्रा होती है उसे लेटेराइट मिट्टी** कहा जाता है इस प्रकार इस अरावली क्षेत्र में पाई जाने वाली मिट्टी लेटेराइट मिट्टी है।

14. अरावली पर्वतमाला का विस्तार **"दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व" की ओर** है। अरावली पर्वतमाला की चौड़ाई और ऊँचाई लगातार "दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व" की ओर कम होती जाती है जबकि इसकी चौड़ाई और ऊँचाई "उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम " की ओर बढ़ती जाती है।

15. अरावली पर्वतमाला एक महान **जल विभाजक** के रूप में भी कार्य करती है इसके दोनों ओर नदियाँ बहती हैं।

16. अरावली पर्वतमाला राज्य के **कुल भू-भाग का 9% भाग** है जिस पर **संपूर्ण राज्य की 10% जनसंख्या निवास करती है।**

17. अरावली पर्वतमाला में मुख्य रूप से ढलान पहाड़ियों पर मक्का की खेती की जाती है इस क्षेत्र में **उष्ण कटिबंधीय वन** पाए जाते हैं क्षेत्र में **कंक्रीट लाल मिट्टी** पाई जाती है।

प्रश्न – 3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (RAS - 2016)

A. अरावली मरुस्थल के पूर्ववर्ती विस्तार को रोकता है।

B. राजस्थान की सभी नदियों का उद्गम अरावली से है।

C. राजस्थान में वर्षा का वितरण प्रारूप अरावली से प्रभावित नहीं होता है।

D. अरावली प्रदेश धात्विक खनिजों में समृद्ध है।

(A) A, B और C सही हैं।

(B) B, C और D सही हैं।

(C) C और D सही हैं।

(D) A और D सही हैं।

उत्तर - D

नोट – अरावली पर्वतमाला को अध्ययन की दृष्टि से मुख्य रूप से तीन भागों में बाँटा गया है -

1. उत्तरी – पूर्वी अरावली 2. मध्यवर्ती अरावली 3. दक्षिणी अरावली

1. **उत्तरी – पूर्वी अरावली –** इस क्षेत्र का विस्तार **जयपुर, दौसा, अलवर,** जिले में है इस क्षेत्र में अरावली की श्रेणियां अनवरत ना होकर दूर - दूर हो जाती है । इस क्षेत्र में पहाड़ियों की सामान्य ऊँचाई 450 मीटर से 700 मीटर तक है इस प्रदेश की **प्रमुख चोटियाँ रघुनाथगढ़ (सीकर) 1055 मीटर,** खोह (जयपुर) 920 मीटर, भेराच (अलवर) 792 मीटर, बरवाड़ा (जयपुर) 786 मीटर है।

2. **मध्यवर्ती अरावली –** इस भाग में अरावली का विस्तार कम पाया जाता है जो कि ब्यावर के समीप है इसकी **सबसे ऊंची चोटी नाग पहाड़ियों में स्थित तारागढ़ (870 मीटर अजमेर) है** इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 550 मीटर है। अरावली का यह भाग कटा - फटा होने के कारण यहाँ **अत्यधिक मात्रा में दर्रे** (स्थानीय भाषा में **नाल कटा** कहा जाता है) पाए जाते हैं जैसे -

भीलवाड़ा की नाल (पाली), सोमेश्वर की नाल पाली), बर्र दर्रा (पाली)

यह मुख्य रूप से अजमेर, पाली, राजसमंद में स्थित है ।

3. **दक्षिणी अरावली –** यह मुख्य रूप से **सिरोही उदयपुर राजसमंद** में विस्तृत है इसकी **सबसे ऊंची चोटी जरगा चोटी (1481 मीटर उदयपुर में) है ।** इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 1000 मीटर है। इसमें मुख्य रूप से फुलवारी की नाल (उदयपुर), केवड़ा की नाल (उदयपुर) हल्दीघाटी की नाल (राजसमंद) में प्रमुख दर्रे पाए जाते हैं।

नोट – फुलवारी की नाल वन्य जीव अभ्यारण्य तथा मानसी वाकल बेसिन के लिए प्रसिद्ध है । राज्य में सर्वाधिक नदियों का उद्गम अरावली पर्वत से होता है जबकि **सर्वाधिक नदियाँ कोटा संभाग में बहती हैं।**

राज्य के प्रमुख पर्वत, पठार एवं पहाड़ियाँ का नाम एवं उनके बारे में विशेष विवरण -

- **त्रिकुट की पहाड़ियाँ – जैसलमेर दुर्ग** इसी पहाड़ी में बना हुआ है
- **त्रिकूट पर्वत – करौली जिले** में स्थित है इस पर्वत पर **प्रसिद्ध कैलादेवी मंदिर** स्थित है।
- बरवाड़ा की पहाड़ियाँ – यह सवाई माधोपुर जिले में स्थित है इन पहाड़ियों पर चोरों की रक्षक देवी चौथ माता का प्रसिद्ध मंदिर है। अतः इस स्थान को चौथ का बरवाड़ा कहते हैं ।
- भामती की पहाड़ी – यह बारां जिले में स्थित है शाहाबाद दुर्ग भी इसी पहाड़ी पर स्थित है
- **सारण की पहाड़ियाँ** - यह पाली जिले में स्थित हैं इन पहाड़ियों **पर मारवाड़ का भूला बिसरा राजा मारवाड़ का प्रताप / प्रताप** का **अग्रगामी राव चंद्रसेन की छतरी** बनी है।
- छप्पन की पहाड़ियां – बाड़मेर जिले में स्थित इन पहाड़ियों को नाकोड़ा पर्वत कहा जाता है।
- **मानी की पहाड़ी**- भरतपुर जिले में स्थित इन पहाड़ियों पर प्रसिद्ध **बयाना दुर्ग** स्थित है।
- **नानी सिरडी की पहाड़ी** – यह पहाड़ियाँ राज्य के पाली जिले में स्थित है इन पर **सोजत का किला** स्थित है।
- तारागढ़ की पहाड़ियाँ – यह पहाड़ियाँ अजमेर जिले में स्थित हैं इन की ऊँचाई 870 मीटर है
- तारागढ़ पर्वत – यह पर्वत राज्य के बूंदी जिले में स्थित है ।
- देशहरो – **जरगा तथा पहाड़ियों के मध्य हरियाली युक्त क्षेत्र को** देशहरो क्षेत्र कहते हैं
- **ऊपरमाल की पहाड़ियाँ** – बिजोलिया से भैंसरोड़गढ़ तक की क्षेत्र को ऊपरमाल की पहाड़ियाँ कहा जाता है देवगिरी की पहाड़ियाँ यहाँ पर प्रसिद्ध **छाजला आकार का दौसा दुर्ग स्थित है ।**
- हर्ष की पहाड़ियाँ – हर्ष की पहाड़ियाँ सीकर जिले में स्थित है । सीकर जिले में स्थित इन पहाड़ियों पर प्रसिद्ध जीणमाता का मंदिर है ।

4. इस प्रदेश में मुख्य रूप से कपास, गन्ना, चावल, खट्टे रसदार फल, सब्जियाँ आदि का मुख्य रूप से उत्पादन होता है झालावाड़ में मौसमी / संतरा सर्वाधिक होता है

5. राजस्थान के इस क्षेत्र प्रदेश में **धात्विक एवं अधात्विक दोनों प्रकार के खनिज पाए** जाते हैं जैसे – कोटा में कोटा स्टोन, भीलवाड़ा में अभ्रक, टोंक में तांमडा (एक अधात्विक खनिज है) यहाँ मुख्य रूप से साल एवं सागवान, जामुन, बरगद आदि के वनस्पति के रूप में पाए जाते हैं। **बांस को आदिवासियों का "हरा सोना" कहा जाता है आदिवासियों का कल्पवृक्ष महुआ** को कहा जाता है।

6. इस क्षेत्र में **औसत वार्षिक वर्षा 80 सेमी० से 120 सेमी०** तक होती है इस प्रदेश को दो भागों में बाँटा गया है

- विंध्याचल चट्टानी प्रदेश जिसमें चूना पत्थर चिकनी मिट्टी
- हाड़ौती का पठार

7. महान सीमा भ्रंश - अरावली पर्वतमाला के पूर्व में स्थित है जो कि विंध्याचल पर्वत श्रेणी को अरावली से अलग करता है

प्रश्न – 6. निम्नलिखित में से कौनसी पहाड़ियाँ राजस्थान में विंध्यन पर्वत श्रेणियों का विस्तार हैं? (RAS PRE – 2010)

A. मुकन्दरा पर्वत **B. डोरा पर्वत**

C. अलवर पर्वत **D. गिरवा पर्वत**

उत्तर – A

अंतिम रूप से सभी भौतिक प्रदेशों का निष्कर्ष

- उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि तीव्र जलवायु परिवर्तन, औद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण एवं कंक्रीट के जंगलों के विस्तार एवं मानवीय हस्तक्षेप के कारण भौतिक प्रदेशों की संरचना एवं पर्यावरण में परिवर्तन हो रहा है।
- इसी कारण राजस्थान में प्रतिवर्ष सूखा एवं अकाल की स्थिति पाई जाती है।
- अतः इस के संरक्षण के लिए एवं भौतिक प्रदेशों को मूल संरचना में लाने की बहुत आवश्यकता है, जिससे सतत् एवं पोषणीय विकास को बढ़ावा मिले।

"सारांश"

- राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का अवशेष है, जबकि अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैंड का हिस्सा है।
- वर्तमान में राजस्थान के कुल क्षेत्रफल के 61.11% हिस्से पर रेगिस्तान का विस्तार पाया जाता है।
- राजस्थान में स्थित थार का मरुस्थल विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल है, तथा सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरुस्थल भी है।
- थार के मरुस्थल में स्थित प्रमुख उद्यान "राष्ट्रीय मरू उद्यान" है।
- थार के मरुस्थल की प्रमुख नदी "लूनी" तथा प्रमुख नहर "इंदिरा गांधी नहर" है।
- पथरीले मरुस्थल को "हम्मादा" कहा जाता है।
- जोधपुर जिले में सभी प्रकार के बालूका स्तूप पाए जाते हैं, तथा सर्वाधिक बालूका स्तूप जैसलमेर जिले में पाए जाते हैं।
- जैसलमेर की सम तहसील में स्थित "चांदन नलकूप" को "थार का घड़ा" अभी कहा जाता है।
- जैसलमेर के पोकरण से मोहनगढ़ तक 80 मीटर लंबी तथा 60 मीटर चौड़ी भूगर्भिक जल पट्टी को विस्तार है। यहाँ सेवण घास तथा गोडावण पक्षी पाया जाता है।
- सर्वाधिक प्लाया झीलें जैसलमेर जिले में पाई जाती है।
- राजस्थान का न्यूनतम वर्षा वाला स्थान जैसलमेर का "सम गांव" है।
- हनुमानगढ़ के बड़ोपोल गाँव को बर्ड सेंचुरी घोषित किया जा चुका है।
- राज्य का सबसे ठंडा एवं गर्म जिला चूरु है।
- फ्लोराइड युक्त जल पट्टी का विस्तार "कुबड़ पट्टी" कहलाता है।

- नागौर के पठार क्षेत्र में "हरे कबूतर" पाए जाते हैं।
- अरावली पर्वतमाला विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत श्रृंखला है।
- अरावली पर्वतमाला का राज्य में सर्वाधिक विस्तार उदयपुर जिले में तथा न्यूनतम विस्तार अजमेर जिले में है।
- राज्य का सबसे ऊँचा पठार "उड़िया का पठार" है, जो सिरोही जिले में स्थित है।
- अरावली की सबसे ऊँची चोटी गुरु शिखर है, जिसकी ऊँचाई 1722 मीटर है। जो सिरोही जिले में स्थित है।
- राजस्थान का "कल्पवृक्ष महुआ "तथा आदिवासियों का "हरा सोना बांस" को कहा जाता है।
- अरावली को राजस्थान का योजना प्रदेश भी कहा जाता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. भारत की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है -

A. हिमालय B. अरावली

C. विंध्याचल D. सतपुड़ा

उत्तर – B

2. निम्न में से सत्य कथन हैं -

1. राजस्थान का पहला रोप वे भीनमाल (जालौर) में संचालित है।
2. राजस्थान का दूसरा रूप में उदयपुर में संचालित है।

A. केवल (i)

B. केवल (ii)

C. (i) व (ii) दोनों

D. न तो (i) न ही (ii)

उत्तर – C

3. राजस्थान में महान सीमा भ्रंश कहा स्थित है?

A. बूंदी व सवाई माधोपुर के मध्य

B. कोटा व सवाई माधोपुर के मध्य

C. झालावाड़ व कोटा के मध्य

D. कोटा व बूंदी के मध्य

उत्तर - A

4. राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार कौनसा है

A. भोराट का पठार B. लसाड़िया का पठार

C. मेसा का पठार D. हाड़ौती का पठार

उत्तर - A

5. घग्घर नदी के तल को स्थानीय भाषा में क्या कहते हैं?

A. नदिया B. नाली

C. नदी D. नहर

उत्तर - B

6. जरगा पर्वत किस जिले में स्थित है?

A. सिरोही B. उदयपुर

C. अलवर D. अजमेर

उत्तर - B

7. उदयपुर - राजसमंद क्षेत्र का सर्वोच्च शिखर है?

A. जरगा B. कुम्भलगढ़

C. लीलगढ़ D. नागरानी

उत्तर - A

8. तोरावाटी की पहाड़ियाँ मुख्यतः किस क्षेत्र में विस्तृत है?

A. शेखावाटी B. मध्य अरावली

C. आबू D. अजमेर

उत्तर – A

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है। यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें। दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "RPSC RAS (PRE.)" की परीक्षा_ में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद।

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे, जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 7014366728,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/ras-pre-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें →	https://wa.link/6r99q8

b. इनसेप्टीसोल्स 2. अर्द्ध शुष्क एवं आर्द्र

c. अल्फीसोल्स 3. उप-आर्द्र एवं आर्द्र

d. वर्टीसोल्स 4. आर्द्र एवं अति आर्द्र

कूट	a	b	c	d
A.	1	3	4	2
B.	1	2	3	4
C.	1	3	2	4
D.	4	1	2	3

उत्तर - b

5. निम्न में से किस प्रकार की मिट्टी में स्वयं जुताई का गुण पाया जाता है?

a. काली मिट्टी b. जलोढ़

b. शुष्क मिट्टी d. लेटेराइट

उत्तर – A

6. जिलों के किस युग्म में जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है?

a. बीकानेर-जोधपुर b. भरतपुर-धौलपुर

c. कोटा - बूंदी d. अजमेर-नागौर

उत्तर - B

7. हाड़ौती पठार की मिट्टी है ?

a. कछारी (जलोढ़) b. लाल

b. भूरी d. मध्यम - काली

उत्तर – D

8. कौनसी PH परास क्षारीय मृदा की सूचक है?

a. 2.3 - 3.6 b. 7

c. 4.2 - 4.8 d. 7 से ऊपर

उत्तर – D

9. नये मूल की जलोढ़ मृदा नहीं पायी जाती है?

a. भरतपुर b. कोटा

c. जयपुर d. अलवर

उत्तर - B

अध्याय – 7

प्रमुख फसलें

इस अध्याय में हम राजस्थान में कृषि एवं पशुसंपदा का अध्ययन करेंगे । हम स्थायी तथ्यों के अलावा परिवर्तनशील वर्तमान आंकड़ों का भी अध्ययन करेंगे । हम कृषि तथा पशु संपदा का वर्तमान अर्थव्यवस्था में महत्त्व भी जानेंगे तथा इनसे संबंध क्षेत्रों का जो कि हमारी अर्थव्यवस्था में महत्त्व रखते हैं उनका भी अध्ययन करेंगे ।

राजस्थान की कृषि

यहाँ हम कृषि कि विभिन्न पद्धतियों का अध्ययन करेंगे । जो कि निम्न हैं -

राजस्थान में कृषि पद्धतियों का वर्गीकरण

मिश्रित कृषि

कृषि का वह रूप जिसमें पशुपालन व कृषि दोनों साथ - साथ की जाती है । मिश्रित कृषि कहलाती है ।

खड़ीन कृषि - प्लाया झीलों में पालीवाल ब्राह्मणों के द्वारा की जाने वाली कृषि । प्याला झीलों में 3 तरफ खेत के मिट्टी कि दीवार बनाकर ढ़लान पर वर्षा का जल एकत्र कर कृषि की जाती है । **(सर्वाधिक - जैसलमेर)**

ड्यूओं कल्चर - एक वर्ष में एक खेत में दो फसलों का उत्पादन ।

ओलिगों कल्चर - एक वर्ष में एक खेत में तीन फसलों का उत्पादन ।

रिले क्रॉपिंग कृषि - जब एक कृषि वर्ष में 4 बार फसलों का उत्पादन। (कृषि वर्ष । जुलाई से 30 जून)

स्थानांतरित कृषि - वनों को काटकर या जलाकर की जाने वाली कृषि को स्थानांतरित कृषि कहा जाता है।

- आदिवासियों द्वारा डूंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़ एवं बाँसवाड़ा क्षेत्र में जंगल में आग लगाकर बची राख को फैलाकर वर्षा होने पर जो कृषि की जाती है । उसे **झूमिंग या स्थानांतरित कृषि कहते हैं।**

- यह कृषि कुछ वर्षों (प्रायः दो या तीन वर्ष) तक जब तक मृदा में उर्वरता बनी रहती है, इस भूमि पर खेती की जाती है।
- इसके पश्चात् इस भूमि को छोड़ दिया जाता है, जिस पर पुनः पेड़-पौधे उग आते हैं। अब अन्यत्र वन भूमि को साफ करके कृषि के लिये नई भूमि प्राप्त की जाती है और उस पर भी कुछ ही वर्ष तक खेती की जाती है।
- इस प्रकार झूम कृषि स्थानांतरित कृषि है, जिसमें थोड़े-थोड़े समयांतराल पर खेत बदलते रहते हैं।
- **आदिवासियों में यह वालरा' नाम से जानी जाती है। पहाड़ी क्षेत्रों की वालरा 'चिमाता' एवं मैदानी क्षेत्रों की वालरा 'दजिया' कहलाती है।**

प्रश्न – 1. राजस्थान के दक्षिणी - पूर्वी पहाड़ी क्षेत्रों में आदिवासियों द्वारा की जाने वाली कृषि को कहते हैं - (RAS - 2015)

A. वालरा **B. चिमाता**

C. दजिया **D. शुष्क खेती**

उत्तर – B

<u>शुष्क कृषि (बारानी)-</u>

- **50 सेमी. से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में** वर्षा जल का सुनियोजित रूप से संरक्षण व उपयोग कर कम पानी की आवश्यकता वाली व शीघ्र पकने वाली फसलों की कृषि की जाती है।
- यह कृषि राज्यों के अधिकांश जिलों में की जाती है। **(सर्वाधिक-बाड़मेर)**

<u>आर्द्र कृषि-</u>

- 200 सेमी. से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में उपजाऊ कांप व काली मिट्टी पर उन्नत व व्यापारिक फसल प्राप्त की जाती है, वह 'आर्द्र कृषि' कहलाती है।
- राज्य के बारां, झालावाड़, कोटा, बाँसवाड़ा, एवं चित्तौड़गढ़ में आर्द्र कृषि की जाती है।

<u>सिंचित कृषि-</u>

- यह कृषि राज्य के उन क्षेत्रों में कि जाती है जहाँ सिंचाई के लिए जल **नहरों, नलकूपों से** लिया जाता है । जैसे **हनुमानगढ़ , श्रीगंगानगर में नहरों** का जल सुगमता से उपलब्ध हो जाता है ।
- राज्य की लगभग 32 प्रतिशत कृषि भूमि पर वर्षा के अलावा अन्य स्रोतों से पानी देकर फसल तैयार की जाती है।
- यह 50 से 100 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाती है। **अलवर, भरतपुर, करौली, सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा, अजमेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ आदि जिले** इस क्षेत्र में आते हैं।

2. ऋतु के आधार पर

(i) खरीफ की फसलें

(अ) खरीफ की प्रमुख फसलें :- धान, मक्का, ज्वार, मूंग, मूंगफली, लोबिया, कपास, जूट, बाजरा, ग्वार, तिल, मोठ आदि हैं।

(ब) खरीफ की फसलों की बुवाई जून - जुलाई में और कटाई अक्टूबर महीने में की जाती है।

(ii) रबी की फसलें

(अ) रबी की प्रमुख फसलें:- जौ, राई, गेहूँ, जई, सरसों, मेंथी, चना, मटर आदि हैं।

(ब) रबी की फसल की बुवाई अक्टूबर - नवबंर में तथा कटाई अप्रैल महीने में की जाती है।

(iii) जायद की फसलें

(अ) जायद की प्रमुख फसलों में तरबूज, खरबूजा, टिंडा, ककड़ी, खीरे, मिर्च आदि हैं।

(ब) जायद की फसल की बुवाई फरवरी - मार्च में तथा कटाई जून महीनें में की जाती है।

3. उपयोग के आधार पर

(i) खाद्यान फसलें - राजस्थान की खाद्यान फसलें गेहूँ, चावल (धान), बाजरा, जौ, मक्का, ज्वार, दलहन, तिलहन प्रमुख हैं।

(ii) वाणिज्यिक फसलें - राजस्थान की वाणिज्यिक फसलें कपास और गन्ना हैं।

राजस्थान में खाद्यान्नों में गेहूँ , जौ, चावल, मक्का, बाजरा, ज्वार, रबी एवं खरीफ की दलहन फसलें शामिल हैं।

1. <u>गेहूँ</u>

- राज्य में सर्वाधिक क्षेत्र में खाद्यान्न फसल के रूप में गेहूँ बोया जाता है।
- **गेहूँ को बोए जाने के समय तापमान कम से कम 8° से 10° से.** तक होना चाहिए तथा **पकने**

के समय तापमान 15° से 20° से. तक होना चाहिए।

- **50 - 100 सेमी. के बीच वर्षा** की आवश्यकता होती है। राजस्थान में साधारण गेहूँ (ट्रीटिकम) एवं मैक्रोनी गेहूँ (लाल गेहूँ) सर्वाधिक पैदा होता है।
- गेहूँ उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र पूर्वी एवं दक्षिणी - पूर्वी **राजस्थान के जयपुर, अलवर, कोटा, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और सवाई माधोपुर जिले हैं।**
- राजस्थान में **सर्वाधिक गेहूँ श्रीगंगानगर जिले** में उत्पादित होता है इसलिए श्रीगंगानगर जिला अन्न का भण्डार कहलाता है।
- **नाइट्रोजन युक्त दोमट मिट्टी, महीन कांप मिट्टी व चीका (चीकनी) प्रधान मिट्टी** गेहूँ उत्पादन हेतु उपयुक्त होती है। मिट्टी ph मान 5 से 7.5 के मध्य होना चाहिए।
- **राजस्थान में दुर्गापुरा-65, कल्याण सोना, मैक्सिकन, सोनेरा, शरबती, कोहिनूर, सोनालिका, गंगा सुनहरी, मंगला, कार्निया-65 ,लाल बहादुर, चम्बल-65, राजस्थान-3077 आदि किस्में** बोई जाती हैं।

  गेहूँ में छाछ्या, करनवा, रतुआ, चेंपा रोग पाए जाते हैं।

  इण्डिया मिक्स- गेहूँ , मक्का व सोयाबीन का मिश्रित आटा।

2. जौ

- राजस्थान में जौ उत्पादन क्षेत्रफल लगभग 2.5 लाख हैक्टेयर है।
- **भारत के कुल उत्पादन का 1/4 भाग राजस्थान में** पैदा होता है। जौ शीतोष्ण जलवायु का पौधा है तथा रबी की फसल है।
- **जौ की बुवाई के समय लगभग 10° - 15° सें.** तापमान की आवश्यकता है तथा काटते **समय 30° से 22° सेन्टीग्रेड** तापमान होना चाहिए।
- जौ के लिए **शुष्क और बालू मिश्रित कांप मिट्टी (दोमट मिट्टी)** उपयुक्त रहती है।
- **जौ की प्रमुख किस्में ज्योति, राजकिरण, R-D. 2508,** मोल्वा आदि है।
- राजस्थान में प्रमुख जौ उत्पादन जिले **जयपुर (सर्वाधिक), उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा व अजमेर हैं।**
- जौ का उपयोग मिस्सी रोटी बनाने, मधुमेह रोगी के उपचार, शराब व बीयर बनाने, माल्ट उद्योग में किया जाता है।

3. बाजरा

विश्व का सर्वाधिक बाजरा भारत में पैदा होता है। बाजरे के उत्पादन एवं क्षेत्रफल में **राजस्थान का भारत में प्रथम स्थान है।** राजस्थान देश का लगभग **एक तिहाई** बाजरा उत्पादित करता है।

बाजरा राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्र पर बोई जाने वाली खरीफ की फसल है।

बाजरा के लिए शुष्क जलवायु उपयुक्त रहती है।

बाजरे की बुवाई मई, जून या जुलाई माह में होती है। बाजरे की **बुवाई करते समय तापमान 25° से 35° सेन्टीग्रेड** तक होना चाहिए।

बाजरे के लिए 40से 50 सेमी. उपयुक्त रहती है। **बाजरा बलुई, बंजर, मरुस्थलीय तथा अर्द्ध कांपीय मिट्टी में पैदा होता है ।**

बाजरा की प्रमुख किस्में ICTP - 8203,WCC - 75,राजस्थान - 171,RHB - 30,RHB - 58,RHB - 911, **राजस्थान बाजरा चरी-2 हैं। बाजरा को** जोगिया, ग्रीन ईयर, कण्डुआ, सूखा रोग नुकसान पहुँचाते हैं ।

केन्द्र सरकार द्वारा अखिल भारतीय समन्वित बाजरा सुधार परियोजना व मिलेट डायरेक्टोरेट को क्रमशः पूना व चौन्नई से जोधपुर व जयपुर स्थानांतरित किया गया है। दो नए केन्द्र बीकानेर एवं जोधपुर में स्थापित किए गए हैं।

4. मक्का

भारत में कुल मक्का उत्पादन का 1/8 भाग राजस्थान में उत्पादित होता है। मक्का मुख्यतः खरीफ की फसल है।

उष्ण एवं आर्द्र जलवायु मक्का के उपयुक्त रहती है। मक्का की **बुवाई करते समय** औसत तापमान **21° से 27° सेन्टीग्रेड** तक होना चाहिए।

गन्ने की खेती के लिए 20° से 25° सेन्टीग्रेट तापमान तथा 100 से 200 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता रहती है।

राजस्थान में गन्ना बूंदी (सर्वाधिक), उदयपुर, चितौड़गढ़ व श्रीगंगानगर जिलों में उत्पादित होता है।

गन्ने में लाल सड़न रोग, पाइरिला, कण्डवा, रेड रॉट आदि रोग लग जाते हैं।

2. कपास -

कपास मूलतः भारतीय पौधा है। कपास के लिए **20° से 30° सेन्टीग्रेट तापमान,** 50 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा तथा **नमी युक्त चिकनी मिट्टी या काली मिट्टी उपयुक्त** रहती है।

राजस्थान में कपास को ग्रामीण भाषा में बणियाँ कहा जाता है। इसे **सफेद सोना** भी कहा जाता है। कपास की बुवाई मई - जून के महीने में की जाती है। ज्यादा ठंड से कपास की फसल को बालबीविल कीड़ा नुकसान पहुँचाता है। इसकी रोग प्रतिरोधक फसल भिण्डी होती है।

राजस्थान में कपास श्रीगंगानगर (सर्वाधिक), हनुमानगढ़, अजमेर, भीलवाड़ा, झालावाड़, चितौड़गढ़, उदयपुर, पाली, कोटा, बूंदी व झालावाड़ जिलों में उत्पादित होता है।

कपास की एक गांठ का वजन 170 किलोग्राम होता है।

राज्य में में बोई जाने वाली कपास के विभिन्न प्रकार :-

1. नरमा - श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ में बोयी जाती है।

2.अमेरिकन कपास - लम्बे रेशे वाली वाली कपास श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में सर्वाधिक होती है।

3. मालवी कपास - यह कपास कोटा, बूंदी, झालावाड़ व टोंक जिलों में बोयी जाती है।

4. देशी कपास- यह कपास उदयपुर, चितौड़गढ़ व बाँसवाड़ा जिलों में सर्वाधिक बोयी जाती है।

5. मरुविकास (RAJ - H - H.-16) - राजस्थान में कपास की पहली संकर किस्म।

6. **बी.टी. कपास -**

- बेसिलस थ्रेजेन्सिस (विशेष क्रिस्टल प्रोटीन बनाने वाला) का बीज में प्रत्यारोपण।
- इसमें जैव-अभियांत्रिकी तकनीक से बीज की संरचना में डी.एन.ए. की स्थिति को प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और टाक्सीकेट्स में बदला जाता है।
- राजस्थान के जैसलमेर व चुरू जिलों में कपास का उत्पादन नहीं होता है।

3. तंबाकू-

तम्बाकू का पौधा भारत में सर्वप्रथम 1508 में **पुर्तगालियों द्वारा लाया** गया।

तम्बाकू के **लिए 20° से 35° सेन्टीग्रेड तापमान** तथा 50 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।

तम्बाकू एक **उष्ण कटिबंधीय पौधा** है। राजस्थान में तम्बाकू की दो किस्में प्रमुख हैं-1. निकोटिना टुबेकम व 2. निकोटिना रास्टिका।

4. ग्वार-

- ग्वार की खेती प्रमुख रूप से भारत के उत्तर - पश्चिमी राज्यों (राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, उत्तरप्रदेश एवं पंजाब) में की जाती है।
- देश के कुल ग्वार **उत्पादक क्षेत्र का लगभग 87 प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान के अंतर्गत** आता है।
- ग्वार, वर्षा-सिंचित फसल है, इसे जुलाई-अगस्त में बोया जाता है और अक्टूबर-नवम्बर में काटा जाता है।
- फलीदार फसल होने के कारण ग्वार, नाइट्रोजन में सुधार लाकर मिट्टी उपजाऊ बनाता है।
- ग्वार में ग्लेक्टोमेनन नामक गोंद होता है। जो संपूर्ण विश्व में ग्वार गम के नाम से जाना जाता है। जिसका इस्तेमाल खाद्य पदार्थों, औषधि निर्माण में किया जाता है।
- ग्वार का उत्पादन बढ़ाने हेतु राजस्थान में दुर्गापुरा (जयपुर) स्थित कृषि अनुसंधान केन्द्र उन्नत किस्में तैयार करता है।
- **सबसे बड़ी ग्वार मण्डी जोधपुर में** स्थित है तथा **ग्वार गम उद्योग जोधपुर में** सर्वाधिक है।
- जोधपुर में ग्वार गम जाँच लैब स्थापित की गई है।

5. खजूर-

- **खजूर अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में** स्थित है। वर्तमान में बीकानेर क्षेत्र में खजूर की खेती की जाती है।

- खजूर **की प्रमुख किस्में हिवानी, मेंजुल, अरबी खजूर, बहरी, जाहिंदी** आदि हैं।
- खजूर में लगने वाला प्रमुख रोग ग्रोफियोला है।
- **देश की पहली व एशिया की दूसरी सबसे बड़ी खजूर पौध प्रयोगशाला जोधपुर के चोपासनी में** स्थापित की गई है।

6. ईसबगोल (घोड़ा जीरा) -

- ईसबगोल के प्रमुख उत्पादक जिले **जालौर, बाड़मेर, सिरोही, नागौर, पाली तथा जोधपुर हैं।**
- **विश्व का लगभग 80 प्रतिशत ईसबगोल भारत में** पैदा होता है।
- **भारत का 40 प्रतिशत ईसबगोल जालौर जिले में** पैदा होता है।
- ईसबगोल का उपयोग औषधि निर्माण, कपड़ों की रंगाई छपाई, सौंदर्य प्रसाधन, फाइबर फूड के निर्माण में किया जाता है।
- **मण्डोर (जोधपुर) में स्थित कृषि अनुसंधान केन्द्र में ईसबगोल पर शोध कार्य** किया जा रहा है।
- राजस्थान में औषधीय महत्व की फसलों के होने वाले निर्यात में ईसबगोल का निर्यात सर्वाधिक होता है।
- आबूरोड़ (सिरोही) में ईसबगोल का कारखाना स्थापित किया गया है।

7. जीरा-

- **जीरा रबी की फसल है।** जीरे में होने वाले प्रमुख रोग छाछिया, झुलसा, उकटा आदि हैं।
- जीरे की प्रमुख किस्में RS-1, SC&43 हैं।
- **जीरा उत्पादन व क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का देश में पहला स्थान है।**
- **जीरा मुख्यतः जालौर जिले की भीनमाल, जसवंतपुरा व रानीवाड़ा तहसीलों में पैदा होता है।**
- राजस्थान में जीरे की सबसे बड़ी मंडी भदवासिया (जोधपुर) में स्थित है।

तिलहन

- तिलहन के उत्पादन में **राजस्थान का उत्तर प्रदेश के बाद दूसरा स्थान है।**
- राजस्थान में रबी की तिलहन फसलों में सरसों, राई, तारामीरा व अलसी तथा खरीफ की तिलहन फसलों में मूंगफली, सोयाबीन, तिल व अरंडी प्रमुख हैं।

1. सरसों-

विश्व में सरसों उत्पादन में **भारत का तीसरा स्थान** है । तथा **राजस्थान भारत का प्रथम राज्य** है । इसलिए **राजस्थान को सरसों का प्रदेश** कहा जाता है।

सरसों के लिए शीत एवं शुष्क जलवायु, 20° से 25° सेन्टीग्रेड तापमान, 75 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा व **हल्की चिकनी मिट्टी या दोमट मिट्टी उपयुक्त** रहती है।

सरसों की प्रमुख किस्में वरुणा (सबसे उन्नत किस्म) , RH-819, RL-1359, बायो-902 तथा पूसा बोल्ड हैं।

सरसों में होने वाले प्रमुख रोग चेंपा (मस्टर्ड एसिड), तना गलन रोग, सफेद रोली तथा आल्टनेरिया झुलसा हैं।

राजस्थान में सरसों के प्रमुख उत्पादक जिले **भरतपुर (सर्वाधिक), अलवर, जयपुर, श्रीगंगानगर, धौलपुर व सवाई माधोपुर हैं।**

सरसों से तेल निकालने के बाद बचने वाली लुगदी खल कहलाती है।

भरतपुर जिले के सेवर नामक स्थान पर आठवीं पंचवर्षीय योजना में 20 अक्टूबर, 1993 को केन्द्रीय सरसों अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गई।

राजस्थान की सबसे बड़ी सरसों मंडी सुमेरपुर (पाली) में स्थित है।

2. तिल-

तिल मुख्य रूप से **खरीफ की फसल** है। इसके लिए उष्ण एवं आर्द्र जलवायु उपयुक्त रहती है।

तिल के लिए **25° से 35° सेन्टीग्रेड तक तापमान** एवं 50 से 100 सेमी. वार्षिक वर्षा की आवश्यकता रहती है।

तिल के लिए **हल्की बलुई और दोमट मिट्टी** जिसमें जीवांश की मात्रा हो उपयुक्त रहती है।

तिल के प्रमुख **उत्पादक जिले पाली (सर्वाधिक) व नागौर हैं।**

3. मूँगफली-

मूँगफली के लिए **25° से 35° सेन्टीग्रेट तापमान,** 50 से 150 सेमी. वार्षिक वर्षा एवं **केल्शियम युक्त**

13. तवी ट्रैक्टर के पीछे चलाकर खेत की जुताई की जाती हैं।

14. कल्टीवेटर ट्रैक्टर के पीछे चलाकर खेत में बुवाई की जाती हैं।

15. कुत्तर मशीन खेती में डोका, कड़ब, घास, सेवण, घामण, आदि को काटने के काम में आती हैं।

16. दंताली वर्मी कम्पोस्ट खाद में लगाने के काम में आता हैं। जिससे खाद को कीड़ा से बचाया जाता हैं।

17. कुल्हाड़ी (कवाड़ी) बड़ी झाड़ियों, काँटों को छाँगने या काटने के लिये।

18. गेंती कठोर मिट्टी /मुरड़ खोदने के लिये।

19. ओड़ी/ओड़ा पशुओं को चारा एवं कचरा भरने के लिये

राजस्थान की मंडिया

प्रमुख मण्डियाँ

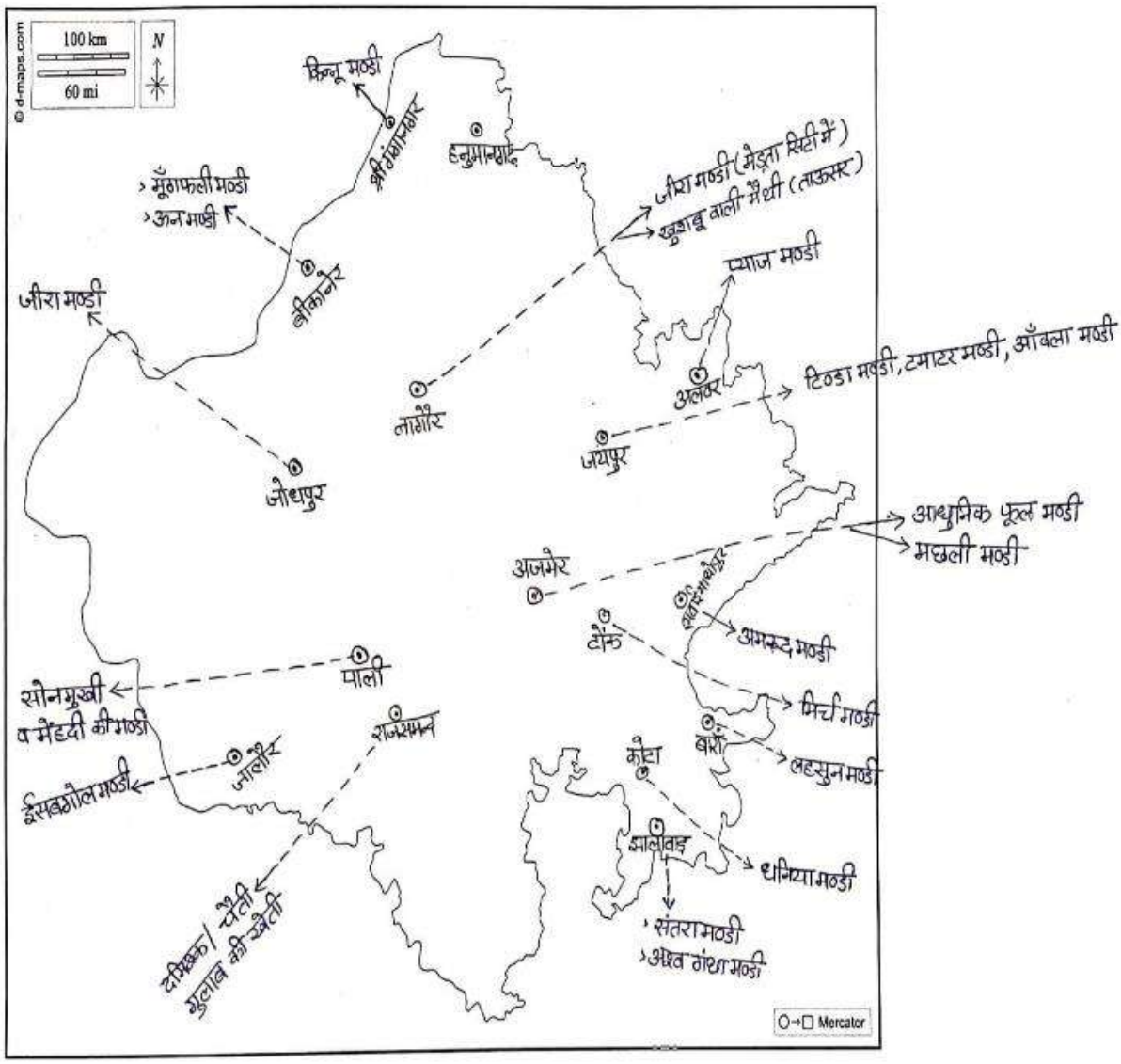

1. **जीरा मंडी - मेडता सिटी (नागौर)**
2. **सतरा मंडी - भवानी मंडी (झालावाड)**
3. कीन्नू व माल्टा मंडी - श्रीगंगानगर
4. प्याज मंडी - अलवर
5. अमरूद मंडी - सवाई माधोपुर
6. **ईसबगोल (घोड़ाजीरा) मंडी - भीनमाल (जालौर)**
7. मूंगफली मंडी - बीकानेर

8. धनिया मंडी - रामगंज (कोटा)
9. **फूल मंडी - अजमेर**
10. मेहंदी मंडी - सोजत (पाली)
11. लहसून मंडी - छीपा बाडौंद (बारां)
12. **अश्वगंधा मंडी -झालरापाटन (झालावाड़)**
13. टमाटर मंडी - बस्सी (जयपुर)
14. मिर्च मंडी - टोंक
15. मटर - बसेड़ी (जयपुर)
16. टिण्डा मंडी - शाहपुरा (जयपुर)
17. **सोनामुखी मंडी - सोजत (पाली)**
18. **आंवला मंडी - चौमू (जयपुर)**

राजस्थान में प्रथम निजी क्षेत्र की कृषि मण्डी कैथून (कोटा) में आस्ट्रेलिया की ए.डब्लू.पी. कंपनी द्वारा स्थापित की गई है।

राजस्थान में कृषि विश्वविद्यालय

1. स्वामी केशवानंद कृषि विवि, बीकानेर
2. महाराणा प्रताप कृषि तकनीकी विवि, उदयपुर
3. कृषि विवि, जोधपुर
4. कृषि विवि, जोबनेर जयपुर
5. कृषि विवि, कोटा
6. **केंद्रीय शुष्क क्षेत्र उद्यानिकी अनुसंधान केंद्र, बीकानेर**

प्रश्न – 2. केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान स्थित है - (RAS - 2016)

A. बीकानेर में **B. श्री गंगानगर में**
C. जोधपुर में **D. उदयपुर में**

उत्तर - A

कृषि परिदृश्य

- कृषि परिदृश्य राज्य की अर्थव्यवस्था में कृषि एवं सहायक क्षेत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है।
- कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र गतिविधियों में प्राथमिक रूप से फसल, पशुधन, वानिकी एवं मत्स्य सम्मिलित हैं।
- जीविकोपार्जन हेतु अधिकांश जनसंख्या कृषि एवं सहायक गतिविधियों पर निर्भर रहती है।
- राजस्थान में कृषि मूलतः वर्षा पर आधारित है। राज्य में मानसून की अवधि कम है।
- राज्य में मानसून अन्य राज्यों की तुलना में विलम्ब से आता है एवं जल्दी ही चला जाता है। वर्षा की अवधि में भी उतार-चढ़ाव रहता है, जो अपर्याप्त, कम एवं अनिश्चित रहती है।
- राज्य में भूमिगत जल स्तर तेजी से गिरता जा रहा है। इसके बावजूद कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र राज्य की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है एवं सकल राज्य घरेलू उत्पाद में इसका प्रमुख योगदान है।
- कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का सकल राज्य मूल्य वर्धन (जी.एस.वी.ए.) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर वर्ष 2015-16 में ₹1.37 लाख करोड़ से बढ़कर वर्ष 2020-21 में ₹1.77 लाख करोड़ हो गया, जो कि 5.26 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि (सी.ए.जी.आर.) दर्शाता है।
- जबकि प्रचलित मूल्यों पर कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का सकल राज्य मूल्यवर्धन (जी.एस.वी.ए.) वर्ष 2015-16 में ₹1.68 लाख करोड़ से बढ़कर वर्ष 2020-21 में ₹2.68 लाख करोड़ हो गया, जो कि 9.8। प्रतिशत वार्षिक वृद्धि (सी.ए.जी.आर.)दर्शाता है।
- राजस्थान के सकल राज्य मूल्यवर्धन (जी.एस.वी.ए.) कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र में स्थिर (2011-12) मूल्यों पर सकल राज्य मूल्यवर्धन (जी.एस.वी.ए.) की वृद्धि दर विकास के सन्दर्भ में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र में वर्ष 2020-21 में वर्ष 2019-20 की तुलना में 3.45 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- कृषि की विकास दर जो वर्ष 2015-16 में यह -0.33 प्रतिशत थी, तीव्र गति से बढ़कर वर्ष 2016-17 में 8.72 प्रतिशत हो गयी।
- राजस्थान के जी.एस.वी.ए. में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का योगदान और इसके उप क्षेत्रों की संरचना राजस्थान के सकल राज्य मूल्यवर्धन (जी.एस.वी.ए.) प्रचलित कीमतों पर वर्ष 2011-12 में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का योगदान 28.56 प्रतिशत था, जो कि बढ़कर वर्ष 2020-21 में 29.77 प्रतिशत हो गया।
- कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र के उप क्षेत्रों में फसल, पशुधन, मत्स्य तथा वानिकी व लॉगिंग है।
- वर्ष 2020-21 में फसल क्षेत्र का अंश 48.36 प्रतिशत, पशुधन क्षेत्र का अंश 42.62 प्रतिशत, वानिकी एवं लॉगिंग क्षेत्र का अंश 8.67 प्रतिशत और मत्स्य क्षेत्र का अंश 0.34 प्रतिशत है।

प्रश्न - 1 राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र स्थित है? (RAS - 2018)

A. डूमाड़ा, अजमेर में **B. मण्डोर, जोधपुर में**

C. बीछवाल, बीकानेर में **D. दुर्गापुरा, जयपुर में**

उत्तर - A

"सारांश"

- आदिवासियों द्वारा वनों को जलाकर की जाने वाली कृषि झूमिंग / वालरा / स्थानान्तरित कृषि कहलाती है।
- कपास तथा गन्ना राजस्थान की वाणिज्यिक फसल है।
- राजस्थान में साधारण गेहूँ (ट्रीटिकम) तथा मैक्रोनी गेहूँ (लाल गेहूँ) सर्वाधिक पैदा होती है। सर्वाधिक गेहूँ श्रीगंगानगर जिले में होता है। श्रीगंगानगर को अन्न का भंडार कहा जाता है।
- खरीफ की फसल - धान, मक्का, ज्वार, कपास, तिल, मोठ
  रबी की फसल - जौ, गेहूँ, चना, मटर, सरसों
- जौ का उपयोग मधुमेह रोगी के उपचार में किया जाता है।
- मक्का की प्रमुख किस्में माही कंचन, माही धवल, सविता (संकर किस्म) आदि है।
- गेहूँ व जौ के साथ चना बोना स्थानीय भाषा में गोचनी या बेझड़ कहलाता है।
- राजस्थान में प्रथम निजी क्षेत्र की कृषि मंडी कैथून (कोटा) में आस्ट्रेलिया की ए.डब्लू.पी. कंपनी द्वारा स्थापित की गई है।
- राजस्थान भारत का 'सरसों का राज्य' कहलाता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. 'बनेड़ा' किसे कहते हैं ?

a. धान की फसलें

b. एक विशिष्ट प्रकार का गोटा

c. पान का खेत

d. विवाह की एक रस्म

उत्तर - (c)

2. राजस्थान राज्य बीज निगम लिमिटेड की स्थापना राष्ट्रीय बीज परियोजना के तहत में की गई थी -

a. 1978 b. 1987

c. 2019 d. 2001

उत्तर - (a)

3. क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का सबसे बड़ा कृषि जलवायु खण्ड है ?

a. आर्द्र दक्षिणी मैदान क्षेत्र

b. सिंचित उत्तरी-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र

c. अति शुष्क आंशिक सिंचित क्षेत्र

d. बाढ़ संभाव्य पूर्वी मैदानी क्षेत्र

उत्तर - (c)

4. राजस्थान के किस स्थान पर सीताफल उत्कृष्टता केंद्र का लोकार्पण हुआ है ?

a. चित्तौड़गढ़ b. राजसमंद

c. बांसवाड़ा d. डूंगरपुर

उत्तर-(a)

5. राजस्थान में कौनसा जिला ईसबगोल, जीरा और टमाटर के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है।

a. बूंदी b. जालौर

c. कोटा d. झालावाड़

उत्तर - (b)

पशु	कुल संख्या (लाख) अधिकतम न्यूनतम
बकरी	208.4 बाड़मेर, धौलपुर
गाय	139 उदयपुर धौलपुर
भैंस	137 जयपुर जैसलमेर
भेड़	79 बाड़मेर बाँसवाड़ा
ऊँट	21.3 जैसलमेर प्रतापगढ़
गधे	23 बाड़मेर टोंक
घोड़े	34 बीकानेर डूंगरपूर

राजस्थान में गाय की विभिन्न नस्लें

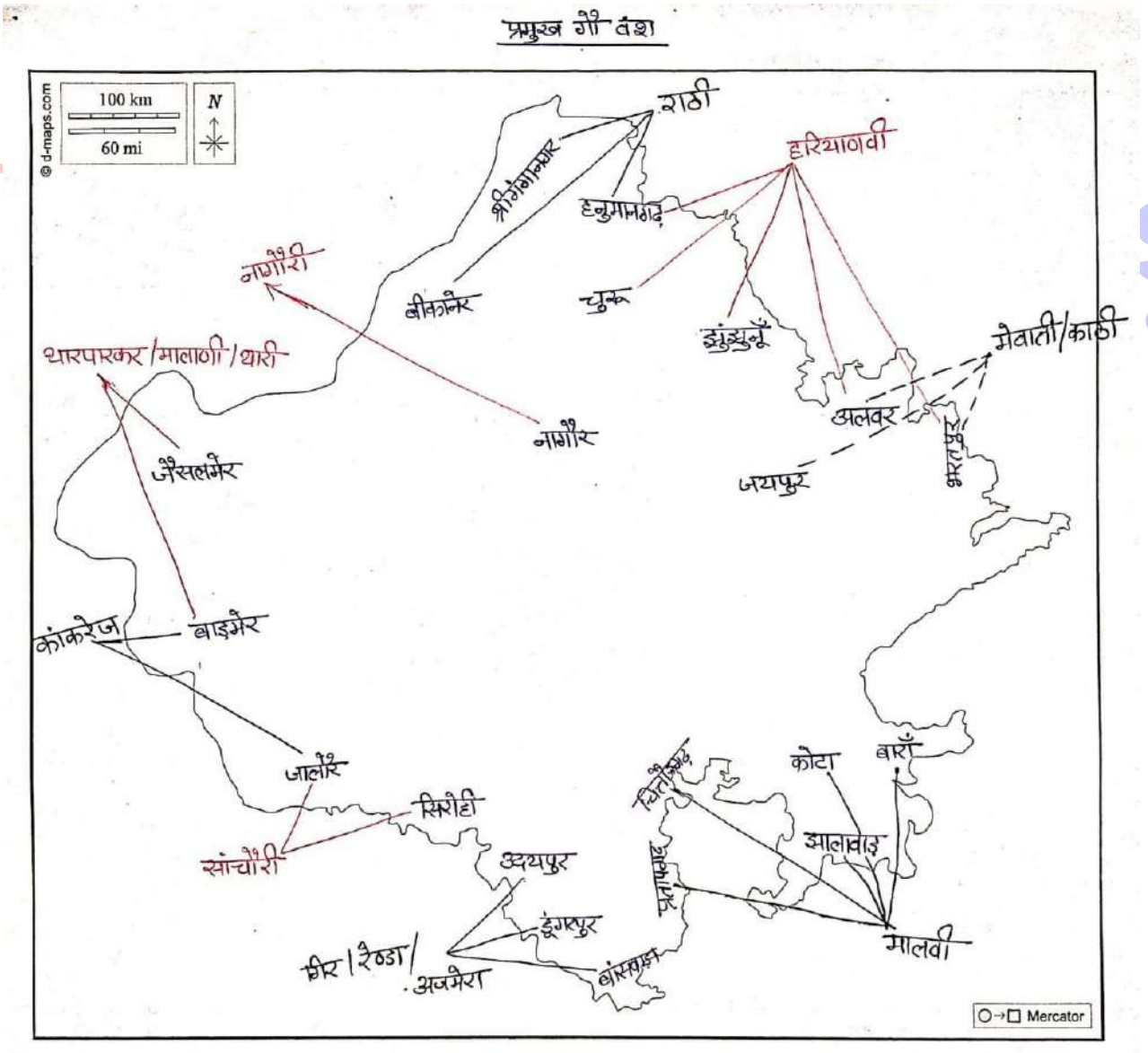

भेड़ों की नस्लें

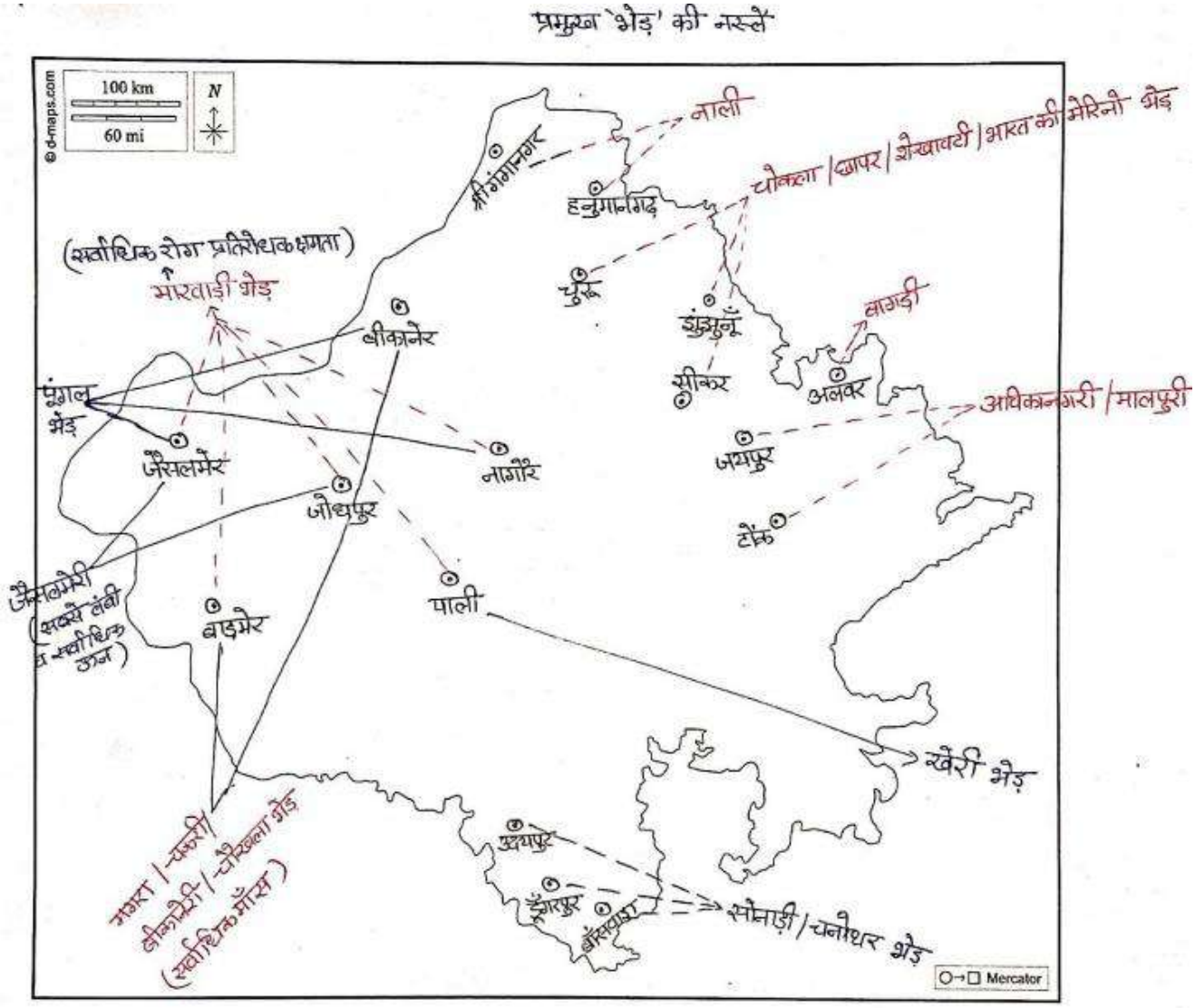

1. चोकला भेड़ :-

- ***झुंझुनूं, सीकर ,चूरू, बीकानेर व जयपुर*** *जिले में यह पाई जाती है ।*
- *इसे छापर एवं शेखावाटी के नाम से भी जाना जाता है। इसे* ***भारत की मेरिनो*** *कहा जाता है ।*
- *इससे प्राप्त हुई फाइन सर्वोत्तम किस्म का है।*

2. मालपुरी / अविकानगरी भेड़ :-

- *यह* ***जयपुर, टोंक, सवाई माधोपुर, बूंदी, अजमेर, भीलवाड़ा में*** *पाई जाती है ।*
- ***ऊन मोटी*** *होने के कारण गलीचे के लिए उपयुक्त है।*
- *इसे देसी नस्ल भी कहा जाता है।*

3. सोनाड़ी भेड़ :-

- ***उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़ ,बाँसवाड़ा भीलवाड़ा*** *में पाई जाती है ।*
- *इसका* ***उपनाम – चनोथर***

4. पूगल भेड़ :-

- *बीकानेर के पश्चिमी भाग व जैसलमेर ,नागौर में पाई जाती है।*

5. मगरा भेड़ :-

- *इसे* ***बीकानेरी चोकला*** *भी कहा जाता है ।*
- *यह बीकानेर जैसलमेर और नागौर जिले में पाई जाती है।*

6. नाली भेड़ :-

- यह श्रीगंगानगर, झुंझुनूं, सीकर, बीकानेर व चूरू में पाई जाती है ।
- इसकी **ऊन घने व लंबे रेशे** वाली होती है।

7. मारवाड़ी भेड़ :-

- जोधपुर, बाड़मेर, नागौर पाली, सिरोही में पाई जाती है।

8. जैसलमेरी भेड़ :-

- यह जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर में पश्चिमी भाग में पाई जाती है।
- **सर्वाधिक ऊन** इस नस्ल की भेड़ों से प्राप्त होती है।

भेड़ों की विदेशी नस्लें

1. **रूसी मेरिनों भेड़ –** टोंक, सीकर, जयपुर में बहुतायत में पायी जाती है।
2. **रेम्बुलेट भेड़ –** टोंक
3. **कोरिडेल भेड़ –** टोंक में बहुतायत में पायी जाती है।
4. **डोर्सेट भेड़ –** चित्तौड़गढ़ में बहुतायत में पायी जाती है।

बकरी-

- **राजस्थान का देश में प्रथम स्थान है।** नागौर जिले का वरुण गाँव बकरियों के लिए प्रसिद्ध है।
- **सर्वाधिक बकरियाँ बाड़मेर, जोधपुर में** जबकि **न्यूनतम बकरियाँ धौलपुर में** पाई जाती हैं।

बकरी की नस्लें

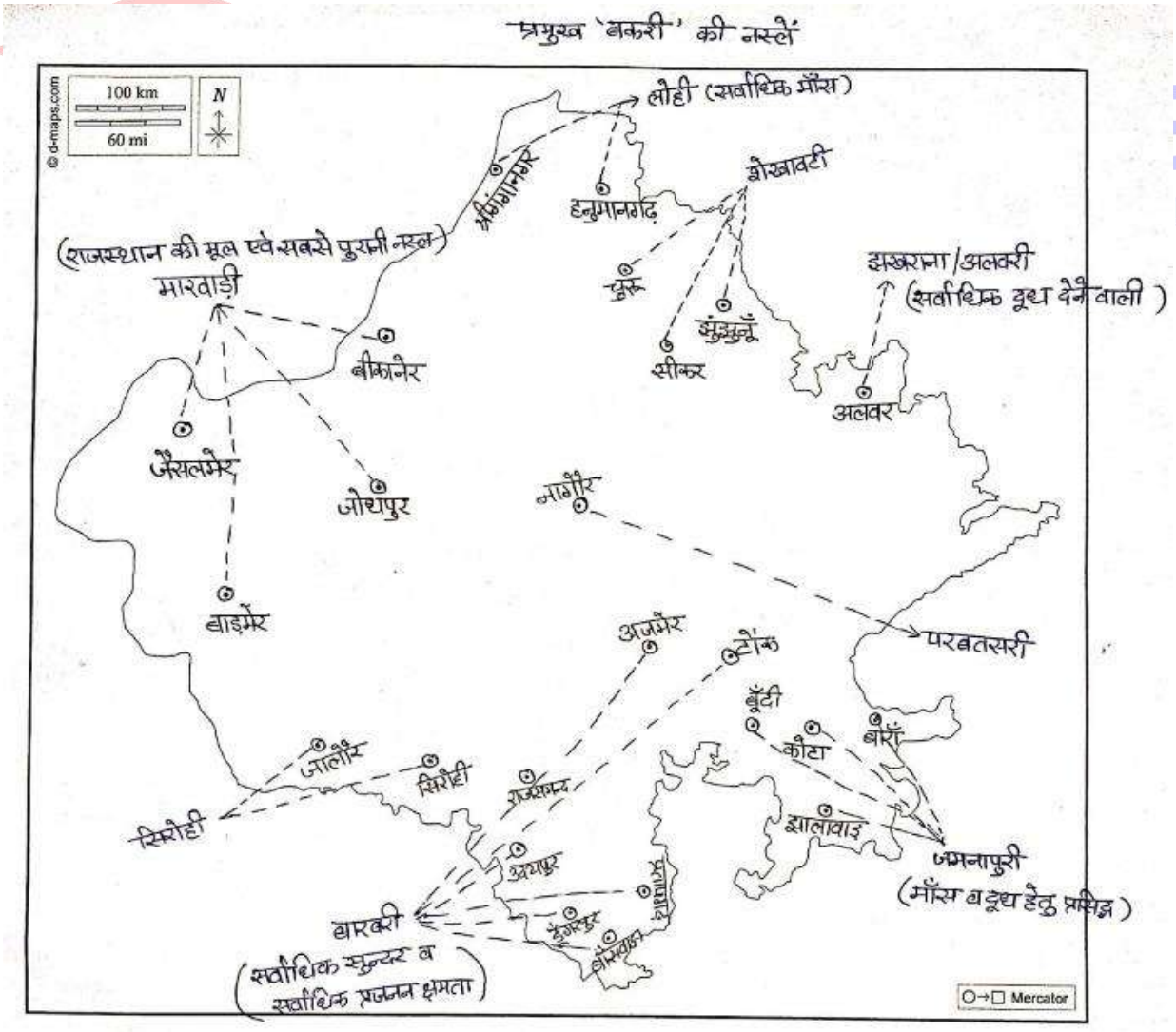

1. मारवाड़ी या लोही बकरी :-

- राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों जैसे जोधपुर, पाली, नागौर, बीकानेर, जालौर, जैसलमेर व बाड़मेर आदि में पाई जाती है ।
- इसके शरीर से प्राप्त होने वाले **बाल गलीचे व नंदा** बनाने के काम आते हैं।

2. जखराना या अलवरी :-

- मूल स्थान बहरोड़ (जखराना गाँव)अलवर ।
- यह **अधिक दूध** देने के लिए प्रसिद्ध है।

3. बारबरी / बडवारी :-

- यह बाँसवाड़ा, धौलपुर, भरतपुर, अलवर, करौली, व सवाई माधोपुर में पाई जाती है ।
- **अधिक दूध** देने के लिए प्रसिद्ध।

4. सिरोही :-

- यह अरावली पर्वतीय क्षेत्र में पाई जाती है। **मांस के लिए** उपयुक्त।

5. परबतसर :-

- यह परबतसर नागौर, अजमेर व जयपुर में पाई जाती है।

6. जमुनापारी :-

- यह हाड़ौती क्षेत्र कोटा, बूंदी झालावाड़ में पाई जाती है । यह **अधिक मांस व दूध देने** हेतु प्रसिद्ध है।

7. शेखावटी :-

- सीकर, झुंझुनू में पाई जाती है। **यह बिना सिंग वाली नस्ल है।**

अन्य पशु सम्पदा –

ऊँट

गोमठ ऊँट-

विशेषता-

राजस्थान में गोमठ ऊँट सर्वाधिक जोधपुर की फलौदी तहसील में पाया जाता है।

गोमठ ऊँट **सवारी हेतु प्रसिद्ध** माना जाता है।

2. नाचना ऊँट-

विशेषता-

राजस्थान में नाचना ऊँट **सर्वाधिक जैसलमेर** में पाया जाता है।

यह ऊँट **सबसे सुन्दर ऊँट माना** जाता है।

यह ऊँट **राजस्थान में नाचने हेतु प्रसिद्ध है।**

3. जैसलमेरी ऊँट-

विशेषता-

राजस्थान में जैसलमेरी ऊँट सर्वाधिक जैसलमेर में पाया जाता है जिसे **रेगिस्तान का जहाज** भी कहा जाता है।

राजस्थान में ऊँटों की अन्य नस्लें-

1. अलवरी ऊँट
2. सिंधी ऊँट
3. कच्छी ऊँट
4. बीकानेरी ऊँट

भारत में राजस्थान का प्रथम स्थान

बाड़मेर, बीकानेर, चूरू में सर्वाधिक

नाचना ऊँट अपनी सुंदरता एवं बोझा ढोने के लिए प्रसिद्ध

केंद्रीय ऊँट अनुसंधान संस्थान जोहड़बीड़ (बीकानेर) में है ।

मुर्गी पालन

सबसे उन्नत नस्ल की मुर्गियाँ अजमेर में पायी जाती है ।

कड़कनाथ योजना – **बाँसवाड़ा में मुर्गी पालन के लिए चलायी गयी योजना।**

नस्लें – असील, बरसा, टेनी, वाइट लेगहॉर्न, इटेलियन।

राजकीय कुक्कुट प्रशिक्षण केंद्र अजमेर में है ।

राज्य कुक्कुट फार्म जयपुर में है ।

प्रश्न – 1. कड़कनाथ एक किस्म है? (RAS - 2021)

A. सांड B. बकरा

C. भैंस D. मुर्गा

उत्तर - D

लिंगानुपात (प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या)- 928

- **शहरी लिंगानुपात 914**
- **ग्रामीण लिंगानुपात 933**

सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला : डूंगरपुर (994 महिला / 1000 पुरुष)

सबसे कम लिंगानुपात वाला जिला : धौलपुर (846 महिला/ 1000 पुरुष)

सर्वाधिक लिंगानुपात वाले 5 जिले

डूंगरपुर	994
राजसमंद	990
पाली	987
प्रतापगढ़	983
बाँसवाड़ा	980

न्यूनतम लिंगानुपात वाले 5 जिले

धौलपुर	846
जैसलमेर	852
करौली	861
भरतपुर	880
श्रीगंगानगर	887

सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला (ग्रामीण क्षेत्र में)	पाली (1003 महिला / 1000 पुरुष)
सबसे कम लिंगानुपात वाला जिला (ग्रामीण क्षेत्र में)	धौलपुर (841 महिला / 1000 पुरुष)
सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला (शहरी क्षेत्र में)	टोंक (985 महिला / 1000 पुरुष)
सबसे कम लिंगानुपात वाला जिला (शहरी क्षेत्र में)	जैसलमेर (807 महिला / 1000 पुरुष)

प्रश्न – 3. 2011 की जनगणना के अनुसार, राजस्थान के कौनसे जिलों में ग्रामीण और नगरीय लिंगानुपात सर्वाधिक है? (RAS – 2021)

ग्रामीण लिंगानुपात	शहरी लिंगानुपात
a. राजसमंद	बाँसवाड़ा
b. डूंगरपुर	चूरु
c. पाली	टोंक
d. जालौर	नागौर

(A) b (B) a

(C) d (D) c

उत्तर - D

0-6 आयु वर्ग की जनसंख्या	10,649,504 (कुल जनसंख्या 15.5%)
शहरी जनसंख्या	2,234,621 (13.1%)
पुरुष	1,192,577 (13.4%)
महिला	1,042,044 (12.8%)
ग्रामीण जनसंख्या	8,414,883 (कुल जनसंख्या 16.3%)
पुरुष	4,446,599 (16.7%)
महिला	3,986,284 (16.0%)

0-6 आयु वर्ग में सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला	जयपुर (9,29,926)
0-6 आयु वर्ग में सबसे कम जनसंख्या वाला जिला	जैसलमेर (1,30,463)
0-6 लिंगानुपात	888
शहरी लिंगानुपात	874
ग्रामीण लिंगानुपात	892

0-6 आयु वर्ग में सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला - बाँसवाड़ा (934 बालिका/1000 बालक)

0-6 आयु वर्ग में सबसे कम लिंगानुपात वाला जिला- झुंझुनूं (837 बालिका/1000 बालक)

0 - 6 आयु वर्ग में सर्वाधिक लिंगानुपात वाले 5 जिले

बाँसवाड़ा	934
प्रतापगढ़	933
उदयपुर	924
भीलवाड़ा	928

प्रश्न – 5. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के किन जिलों में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत उनकी कुल जनसंख्या में न्यूनतम है? RAS – 2018

A. सीकर और धौलपुर
B. झुंझुनूं और चूरु
C. बीकानेर और नागौर
D. श्री गंगानगर और हनुमानगढ़

उत्तर – C

प्रश्न – 7. वर्ष 2011 में निम्नलिखित में से कौन से दो जिले उनकी कुल जनसंख्या में सबसे कम अनुसूचित जनजाति व प्रतिशत रखते हैं? RAS – 2016

A. चूरु और सीकर B. श्री गंगानगर और हनुमानगढ़
C. बीकानेर और नागौर D. भरतपुर और धौलपुर

उत्तर – C

वह जिला जहाँ अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या में दशकीय (2001-2011) वृद्धि सर्वाधिक रही	नागौर (60.4%)
वह जिला जहाँ अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या में दशकीय (2001-2011) वृद्धि सबसे कम रही	श्रीगंगानगर (-8.6%)

प्रश्न – 2. राजस्थान में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का द्वितीय स्थान पर सर्वाधिक प्रतिशत है? (2011) RAS – 2021

A. बाँसवाड़ा जिले में
B. प्रतापगढ़ जिले में
C. डूंगरपुर जिले में
D. दौसा जिले में

उत्तर – C

अध्याय – 12

खनिज-धात्विक एवं अधात्विक

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम राजस्थान में पाए जाने वाले प्रमुख खनिज संसाधनों का अध्ययन करेंगे सबसे पहले हम समझते हैं कि खनिज संसाधन किसे कहते हैं।

खनिज

- खनिज :- वे प्राकृतिक पदार्थ हैं जो कि भू-गर्भ से खनन क्रिया द्वारा बाहर निकाले जाते हैं। खनिज प्रमुखतया प्राकृतिक एवं रासायनिक पदार्थों के संयोग से निर्मित होते हैं।
- इनका निर्माण अजैविक प्रक्रियाओं के द्वारा होता हैं। सामान्य शब्दों में, वे सभी पदार्थ जो कि खनन द्वारा प्राप्त किए जाते हैं, खनिज कहलाते हैं।
- जैसे – लोहा, अभ्रक, कोयला, बॉक्साइट (जिससे एल्युमिनियम बनता है), नमक (पाकिस्तान व भारत के अनेक क्षेत्रों में खान से नमक निकाला जाता है), जस्ता, चूना पत्थर इत्यादि।
- ऐसे खनिज जिनमें धातु की मात्रा अधिक होती हैं तथा उनसे धातुओं का निष्कर्षण करना आसान होता है उन्हें अयस्क कहते हैं।

जैसे-

धातु	अयस्क
हेमेटाइट	लोहा
बॉक्साइट	एल्युमिनियम
गैलेना	सीसा
डोलोमाइट	मैग्नीशियम
सिडेराइट	लोहा
मेलाकाइट	तांबा

खनिजों के प्रकार

खनिज तीन प्रकार के होते हैं; धात्विक, अधात्विक और ऊर्जा खनिज।

धात्विक खनिजः

लौह धातुः लौह अयस्क, मैंगनीज, निकेल, आदि।

अलौहधातुः तांबा, लैड, टिन, बॉक्साइट, कोबाल्ट आदि।

बहुमूल्य खनिजः सोना, चाँदी, प्लेटिनम, आदि।

अधात्विक खनिजः

अभ्रक, लवण, पोटाश, सल्फर, ग्रेनाइट, चूना, पत्थर, संगमरमर, बलुआ, पत्थर, आदि।

ऊर्जा खनिजः कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस।

खनिज के भंडारः

- आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में : - इस प्रकार की चट्टानों में खनिजों के छोटे जमाव शिराओं के रूप में, और बड़े जमाव परत के रूप में पाये जाते हैं ।
- जब खनिज पिघली हुई या गैसीय अवस्था में होती है तो खनिज का निर्माण आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में होता है ।
- पिघली हुई या गैसीय अवस्था में खनिज दरारों से होते हुए भूमि की ऊपरी सतह तक पहुँच जाते हैं ।

उदाहरणः टिन, जस्ता, लैड, आदि।

अवसादी चट्टानों मेंः - इस प्रकार की चट्टानों में खनिज परतों में पाये जाते हैं ।

1. मुख्यतः अधात्विक ऊर्जा खनिज पाए जाते हैं।

उदाहरणः कोयला, लौह अयस्क, जिप्सम, पोटाश लवण और सोडियम लवण, आदि।

धरातलीय चट्टानों के अपघटन के द्वाराः - जब अपरदन द्वारा शैलों के घुलनशील अवयव निकल जाते हैं तो बचे हुए अपशिष्ट में खनिज रह जाता है । बॉक्साइट का निर्माण इसी तरह से होता है।

जलोढ़ जमाव के रूप में : - इस प्रकार से बनने वाले खनिज नदी के बहाव द्वारा लाए जाते हैं और जमा होते हैं । इस प्रकार के खनिज रेतीली घाटी की तली और पहाड़ियों के आधार में पाए जाते हैं । ऐसे में वो खनिज मिलते हैं जिनका अपरदन जल द्वारा नहीं होता है । उदाहरणः सोना, चाँदी, टिन, प्लेटिनम, आदि।

महासागर के जल मेंः - समुद्र में पाए जाने वाले अधिकतर खनिज इतने विरल होते हैं कि इनका कोई आर्थिक महत्व नहीं होता है । लेकिन समुद्र के जल से साधारण नमक, मैंग्नीशियम और ब्रोमीन निकाला जाता है।

राजस्थान में खनिज संसाधन –

प्रिय छात्रों राजस्थान में कई प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

- जैसा कि आपको पता है राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहाँ पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण यह राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है । और इसी वजह से इसे "खनिजों का अजायबघर" भी कहा जाता है ।
- दोस्तों **खनिज भंडार की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड के बाद दूसरा स्थान आता है जबकि खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है ।** राजस्थान में देश का कुल खनन क्षेत्र का 5.7% क्षेत्रफल आता है । देश में **सर्वाधिक खाने राजस्थान में स्थित है ।** देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।
- राजस्थान में खनिज मुख्य रूप से अरावली में पाए जाते हैं । अतः इसे खनिजों का भण्डारगृह कहा जाता है ।

राजस्थान की भूमिका :-

↓	↓	↓	↓
भंडारण में	उत्पादन में	विविधता में	आय में
द्वितीय	द्वितीय	प्रथम	पाँचवा
स्थान	स्थान	स्थान	स्थान
(57 प्रकार के	खनिज)	84 प्रकार के	

राजस्थान में 84 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं आइए जानते हैं वह कौन - कौन से खनिज यहाँ पाए जाते हैं।

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है -

पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट

प्रश्न – 2. निम्नलिखित में से कौनसे खनिजों का राजस्थान लगभग अकेला उत्पादक राज्य है? (RAS – 2018)

A. सीसा एवं जस्ता अयस्क

B. ताम्र अयस्क

C. वोलेस्टोनाइट

D. सेलेनाइट

a. A, एवं C **b. A, B एवं D**

c. A, B एवं C **d. A, B, C एवं D**

उत्तर – d

2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -

जस्ता - 97%, फ्लोराइड 96%, **एस्बेस्टस** 96 %, रॉकफोस्फेट 95%, जिप्सम 94 % चूना पत्थर 98%, खड़िया मिट्टी 92%, घीया पत्थर 90%, चांदी 80%, मकराना (मार्बल) 75%, सीसा 75%, **फेल्सपार** 75%, टंगस्टन 75%, कैल्साइट 70%, फायर क्ले 65%, ईमारती पत्थर 60%, बेंटोनाइट 60%, कैडमियम 60%

3. वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है - लोहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज तेल, ग्रेफाइट

राजस्थान में पाए जाने वाले खनिजों को तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है -

1. **धात्विक खनिज** – लौह अयस्क, मैंगनीज, टंगस्टन, सीसा, जस्ता, तांबा, चांदी इत्यादि।

2. **अधात्विक खनिज** - अभ्रक, एस्बेस्टस, फेल्सपार, बालुका मिट्टी, चूना पत्थर, पन्ना, तामड़ा इत्यादि।

3. **ईंधन** - कोयला, पेट्रोलियम, खनिज इत्यादि।

दोस्तों खनिजों की दृष्टि से राजस्थान में अरावली प्रदेश और पठारी प्रदेश काफी समृद्ध है।

- **धात्विक खनिज –**

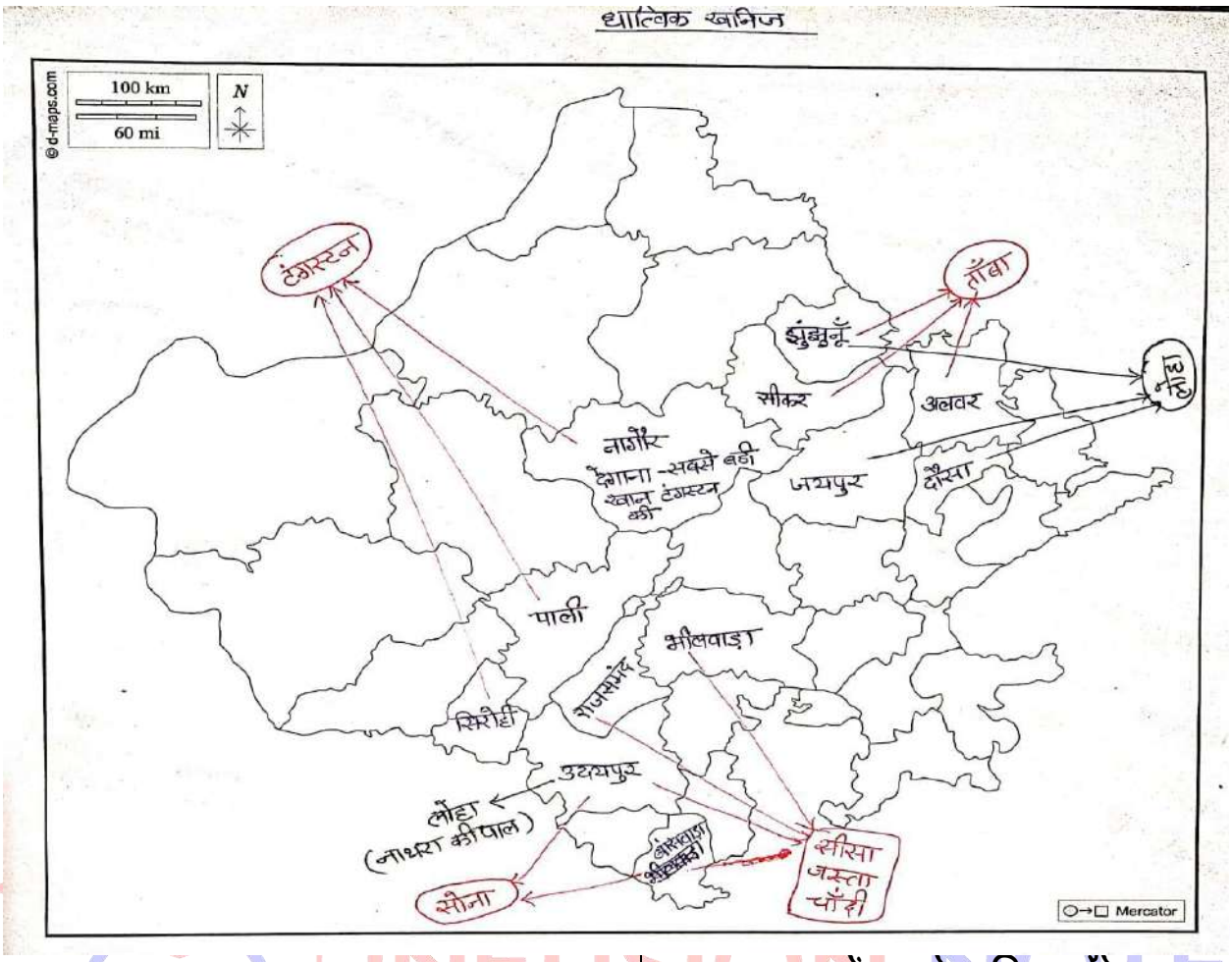

धात्विक खनिज

1. लोहा –राजस्थान में लोहा मुख्य रुप से अरावली के उत्तर – पूर्व एवं दक्षिण- पूर्व में पाया जाता है।

लौहा अयस्क चार प्रकार का होता है-

i. मैग्नेटाइट - 74 %
ii. हेमेटाइट - 65 %
iii. लिमोनाइट - 50 %
iv. सिडेराइट - 40%

→राजस्थान में मुख्य रूप से लोहे का उत्पादन निम्न स्थानों पर होता है एवं राजस्थान में हेमेटाइट व लिमोनाइट लौह अयस्क पाया जाता है।

प्रमुख खान-

- मोरिजा- बानोल- जयपुर
- नीमला- राइसेला- दौसा
- सिंघाना- डाबला–झुंझुनूं
- नीम का थाना- सीकर
- थूर हुण्डेर - उदयपुर
- नाथरा की पाल – उदयपुर

- **राजस्थान में सबसे अधिक लौहे का उत्पादन जयपुर जिले से होता है** । यह हेमेटाइट प्रकार का है।

प्रश्न – 9. लौह अयस्क का खनन क्षेत्र नहीं है – (RAS – 2015)

a) मोरीजा **b) डाबला**
c) नीमला **d) तलवाड़ा**

उत्तर – D

2. सीसा-जस्ता :-

- सीसे जस्ते के अयस्क को गैलेना कहा जाता है । **यह अयस्क मिश्रित रूप में मिलने के कारण इसे जुड़वा खनिज भी कहते हैं।**
- राजस्थान में जिन स्थानों पर सीसे – जस्ते का उत्खनन होता है उन्हीं स्थानों से चाँदी व तांबा का उत्खनन होता है।

प्रमुख खान-

- **जावर खान- उदयपुर**
  →यह देश की सबसे बड़ी जस्ते की खान है।
- राजपुरा–दरीबा- राजसमंद

प्रश्न – 5. निम्नलिखित में से राजस्थान में कौन – कौन से महत्वपूर्ण खनिज आधारित उद्योग हैं ? (RAS – 2018)

A. जस्ता गलन उद्योग B. सीमेन्ट उद्योग

C. इलेक्ट्रॉनिक उद्योग D. संगमरमर उद्योग

a) A, B

b) A, C एवं D

c) A, B एवं D

d) A, B, C एवं D

उत्तर – C

1. डेगाना- भाकरी :- यह **देश की सबसे बड़ी टंगस्टन परियोजना** है (सबसे बड़ी खान), नागौर के डेगाना नामक स्थान पर रैंव की पहाड़ियों में स्थित है।

2. वाल्दा क्षेत्र :- राजस्थान राज्य टंगस्टन विभाग के द्वारा वालदा में भी टंगस्टन का खनन प्रारंभ कर दिया गया है।

- आबू रेवदर - सिरोही
- सेवरिया - पाली
- पीपलिया - पाली

अधात्विक खनिज

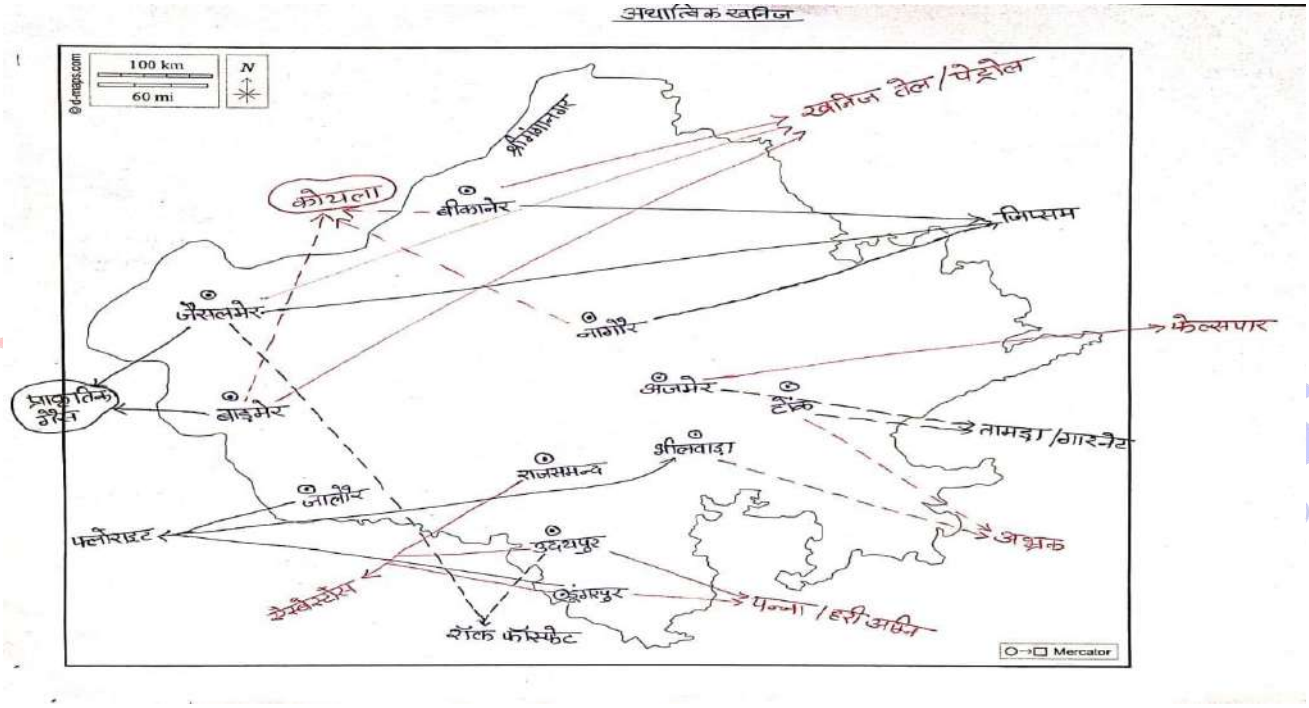

- हरसौंठ/ कैल्शियम सल्फेट । इसका रेवदार रूप सैलेनाइट कहलाता है एवं इसको सुखाने पर P.O.P. (Plastic of Paris) की प्राप्ति होती हैं एवं राजस्थान में क्षारीय भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए जिप्सम का उपयोग किया जाता है ।
- इसके अलावा रासायनिक खाद, रंग रोगन एवं गंधक का तेजाब के निर्माण में भी इसका उपयोग किया जाता है।

इसका **सर्वाधिक उत्पादन नागौर जिले में होता है।**

प्रमुख क्षेत्र

- गौंठ–मांगलोद- नागौर (सर्वाधिक)
- भदवासी- नागौर
- बिसरासर- राज्य की सबसे बड़ी खान - बीकानेर
- जामसर - राज्य का सबसे बड़ा जमाव - बीकानेर

प्रश्न – 8 गोठ – मांगलोद क्षेत्र का संबंध किस खनिज से है – (RAS – 2015)

a) रॉक – फॉस्फेट b) टंगस्टन

c) मैंगनीज d) जिप्सम

उत्तर – D

चूना-पत्थर

यह मुख्य रूप से अवसादी चट्टानों में पाया जाता है।

चूना पत्थर की खानों में अगर 45 % से अधिक मैग्नीशियम हो तो उसे 'डोलोमाइट' कहा जाता है।

स्टील ग्रेड चूना पत्थर - जैसलमेर के सानू क्षेत्र में।

सीमेंट ग्रेड - चितौड़गढ़

कैमिकल ग्रेड चूना पत्थर - जोधपुर व नागौर

नोट:- गोटन (नागौर) में भी चूना पत्थर पाया जाता है।

2. अभ्रक

→अभ्रक आग्नेय एवं कायांतरित चट्टानों में काले रंग के टुकड़ों के रूप में पाया जाता है।

→इसका उपयोग विद्युत उद्योगों में, सजावटी सामानों में एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

→यह ताप का कुचालक होता है।

→माइकेनाइट उद्योग - अभ्रक के चूरे से ईंट तथा चादरें बनाने वाले उद्योग को माइकेनाइट उद्योग कहा जाता है।

→इस उद्योग के सर्वाधिक कारखानें भीलवाड़ा जिले में पाये जाते है।

→अभ्रक को खनिजों का बीमार बच्चा कहा जाता है, क्योंकि देश की 20 बड़ी अभ्रक की खानों से कुल उत्पादन का मात्र 50% प्राप्त होता है

रूबी अभ्रक

→सफेद अभ्रक को रूबी अभ्रक कहा जाता है।

बायोटाइट अभ्रक

→गुलाबी अभ्रक को बायोटाइट अभ्रक कहा जाता है।

→इसका उपयोग दवाईयाँ, सजावटी सामान, वायुयान एवं ताप भट्टियों में किया जाता है।

प्रमुख क्षेत्र

1. भीलवाड़ा - शाहपुरा, पोटला, फुलिया, नट की खेड़ी।

→अभ्रक का सर्वाधिक उत्पादन भीलवाड़ा में होता है

2. अजमेर- ब्यावर, जालिया, भिनाय

3. उदयपुर

4. जयपुर - बंजारीखान

→राजस्थान अभ्रक का उत्पादन की दृष्टि से दूसरा स्थान है।

प्रश्न – 2. निम्न में कौन सा सही सुमेलित है? (RAS – 2021)

A. मांडो की पाल - फेल्सपार

B. तलवाड़ा - सीसा एवं जस्ता

C. खेरवाड़ा - एस्बेस्टस

D. ऋषभदेव – अभ्रक

a) B b) D c) A d) C

उत्तर - D

3. रॉक फास्फेट

जिन चट्टानों में डाई कैल्सियम फास्फेट का प्रतिशत अधिक पाया जाता है उन्हें रॉक फास्फेट चट्टान कहा जाता है।

→इसका उपयोग रासायनिक खाद के उत्पादन में अत्यधिक किया जाता है।

क्षेत्र

1. **झामरकोटड़ा (उदयपुर)-देश की सबसे बडी रॉक फास्फेट खान**

→इसके अलावा उदयपुर के माटोन, कानपुरा, नीमच आदि से भी इनका उत्पादन होता है।

2. जैसलमेर- लाठी, बिरमानिया क्षेत्र, फतेहगढ़

3. जयपुर- अचरोल

4. सीकर- करपुरा

4. एस्बेस्टॉस (90%) (मिनरलसिल्क)

उपयोग- सीमेंट, चादर, रेल के डिब्बे, जहाज, टाइल्स।

एस्बेस्टॉस के दो प्रकार होते है -

1. क्राइसोलाइट

2. एम्फीबोलाइट

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है। यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें। दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "RPSC RAS (PRE.)" की परीक्षा_ में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद।

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे, जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 7014366728,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -I, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/ras-pre-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें →	https://wa.link/6r99q8